

पत्र

जा.क्र.कृषिआ/फलो-२/प्र.क्र. १५/ १५६०/१४  
कृषि आयुक्तालय (फलोत्पादन) महाराष्ट्र राज्य,  
पुणे- ४११ ००५, दिनांक - २५/०६/२०१४

प्रति,

विभागीय कृषि सहसंचालक,  
ठाणे, पुणे, नाशिक, कोल्हापूर, औरंगाबाद,  
लातूर, अमरावती, नागपूर

**विषय :- फलोत्पादन पिकांवरील कीड-रोग सर्वेक्षण, सल्ला व व्यवस्थापन प्रकल्प (हॉर्टसेप)  
सन २०१४-१५ (अंतीम मार्गदर्शक सूचना)**

फलोत्पादन विभागामार्फत आंबा, डाळींब व केळी या पिकांवरील किड/रोगाचे सर्वेक्षण व व्यवस्थापनासाठी किडरोग सर्वेक्षण, सल्ला व व्यवस्थापन प्रकल्प राष्ट्रीय कृषि विकास योजनेंतर्गत सन २०११-१२ पासून राबविण्यात येत आहे. सन २०१४-१५ मध्ये आंबा, डाळींब व केळी या पिकांमध्ये नविन जिल्ह्यांचा समावेश करण्यात येत असून चिकू, संत्रा व मोसंबी या नविन फळपिकांचा समावेश करण्यात येत आहे. सदरचा प्रकल्प आपल्या अधिनस्त असलेल्या जिल्ह्यात राबवावयाचा आहे. सदर कार्यक्रम सन २०१४-१५ मध्ये राबवावयाच्या अंतीम मार्गदर्शक सूचना सोबत सहप्रति करण्यात येत आहेत.

-/स्वा/-

सोबत :- वरीलप्रमाणे

संचालक फलोत्पादन  
कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य,  
पुणे- ४११००५

प्रत,

- १) मा. अपर मुख्य सचिव, कृषि व फलोत्पादन, कृषि व पदुम विभाग, मंत्रालय, मुंबई ० ३२ यांना माहितीस्तव सविनय सादर.
- २) संचालक, राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र, नवी दिल्ली (एनसीआयपीएम) (भारतीय कृषि संशोधन परिषद), नवी दिल्ली.
- ३) वरिष्ठ शास्त्रज्ञ, राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली यांना माहितीस्तव.
- ४) संचालक, राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, पुणे-सोलापूर बायपास, शेळगी रोड, सोलापूर यांना माहितीस्तव.
- ५) संचालक, राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र, पो. बॉक्स नं. ४६४, शंकर नगर पोस्ट ऑफिस, नागपूर, ४४० ०१०
- ६) संशोधन संचालक, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी / डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, जि. रत्नागिरी / मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी / डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला
- ७) संचालक (विस्तार शिक्षण), महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी / डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, जि. रत्नागिरी / मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी / डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला
- ८) प्रमुख, केळी संशोधन केंद्र, जळगाव
- ९) प्रमुख, फळसंशोधन केंद्र, वेंगुर्ला, जि. सिंधुदूर्ग
- १०) कनिष्ठ किटकशास्त्रज्ञ, संशोधन केंद्र, पालघर
- ११) कृषि उपसंचालक, नियोजन, कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे -५
- १२) कृषि उपसंचालक, आयुक्त कृषि कक्ष, कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे ० १

- १) **जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी**, ठाणे, रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदूर्ग, नाशिक, सांगली, सोलापूर, अहमदनगर, जळगाव, औरंगाबाद, बीड, जालना, नागपूर, वर्धा, अमरावती, धुळे, बुलढाणा, अकोला, उस्मानाबाद, वाशिम, नांदेड, हिंगोली, सातारा यांना माहिती तथा आवश्यक त्या कार्यवाहीसाठी.

**राष्ट्रीय कृषि विकास योजनेअंतर्गत फळपिकांवरील कीड-रोग सर्वेक्षण,  
सल्ला व व्यवस्थापन प्रकल्प - २०१४-१५  
(Horticulture Crop Pest Surveillance, Advisory and Management  
Project (HORTSAP) - 2014-15**

**अंतीम मार्गदर्शक सूचना**

१. **प्रस्तावना :-** फलोत्पादन विभागामार्फत आंबा, डाळींब व केळी या पिकांवरील किड/रोगाचे सर्वेक्षण व व्यवस्थापनासाठी किडरोग सर्वेक्षण, सल्ला व व्यवस्थापन प्रकल्प राष्ट्रीय कृषि विकास योजनेंतर्गत सन २०११-१२ पासून राबविण्यात येत आहे. सन २०१४-१५ मध्ये आंबा, डाळींब व केळी या पिकांमध्ये नविन जिल्ह्यांचा समावेश करण्यात येत असून चिकू, संत्रा व मोसंबी या नविन फळपिकांचा समावेश करण्यात येत आहे.
२. **योजनेचा उद्देश :-**
  - २.१ आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांचे सर्वेक्षण करून हंगामनिहाय किडरोगांच्या प्रादुर्भावाबाबत शेतक-यांना वेळीच उपाय योजना सुचविणे.
  - २.२ किडरोगांच्या आकस्मिक प्रादुर्भावामुळे शेतक-यांचे होणारे नुकसान टाळणे.
  - २.३ किडरोगांचा प्रादुर्भाव वेळीच लक्षात आल्याने पुढील संभाव्य नुकसान टाळून उत्पादनात वाढ करणे.
  - २.४ किडरोगांबाबत शेतक-यांना प्रशिक्षित करून किडरोगांचे वेळीच व्यवस्थापन करणे.
  - २.५ किडरोग प्रादुर्भावीत क्षेत्रासाठी आपत्कालीन परिस्थितीत पीक संरक्षण औषधे उपलब्ध करून देणे.
  - २.६ वारंवार येणा-या किडरोगांबाबत सांख्यिकी माहिती संकलीत करणे व कायम स्वरूपाच्या व्यवस्थापनाबाबत कृषि विद्यापीठांच्या सहाय्याने शिफारशी निश्चित करणे.
  - २.७ राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र (भारतीय कृषि संशोधन परिषद) नवी दिल्ली, राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर, राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली, राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र, नागपूर इत्यादी संस्था, राज्यातील चारही कृषि विद्यापीठे व राज्याचा कृषि विभाग यांच्या मदतीने आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांवरील कीड रोगांचे सर्वेक्षण करून शेतक-यांना उपाययोजना सुचविणे, कीड रोग व्यवस्थापनाबाबतच्या शिफारशी तयार करणे आणि या अनुषंगाने कृषि खात्यातील कर्मचारी व शेतकरी यांना प्रशिक्षण देणे.
३. **योजनेचे कार्यक्षेत्र :-**

**आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांवरील कीड रोग सर्वेक्षण व सल्ला प्रकल्प**

**:-** महाराष्ट्र राज्यामध्ये आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू ही मुख्य फळपिके लागवडीखाली आहेत. आंबा फळपिकाखाली ठाणे, रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदूर्ग, बीड, उस्मानाबाद, औरंगाबाद या जिल्ह्यात १,०७,१८२ हेक्टर क्षेत्र, डाळींब पिकाखाली नाशिक, अहमदनगर, सोलापूर, सांगली, सातारा, औरंगाबाद, बीड, व धुळे या जिल्ह्यात ६४,९२८ हेक्टर क्षेत्र, केळी पिकाखाली जळगाव, नांदेड, सोलापूर, हिंगोली जिल्ह्यात ५३,८८१ हेक्टर क्षेत्र, संत्रा पिकाखाली अमरावती, बुलढाणा, वर्धा, वाशिम, अकोला, नागपूर जिल्ह्यात ७३,३८१ हेक्टर क्षेत्र, मोसंबी पिकाखाली औरंगाबाद, बीड, जालना, नांदेड जिल्ह्यात ५६,८५९ हेक्टर क्षेत्र आणि चिकू फळपिकाखाली ठाणे या जिल्ह्यांत ५,४१६ हेक्टर क्षेत्र असून एकूण ३,६१,६४७ हेक्टर क्षेत्रावर कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे.

सदर फळपिकांवर मागील काही वर्षातील कीड रोगांचा प्रादुर्भाव लक्षात घेवून २३ जिल्हयांची निवड या प्रकल्पात करण्यात आली आहे. या प्रकल्पात आंबा पिकाकरीता तुडतुडे, फुलकिडे, फळमाशी, भूरी, करपा व डाळींब पिकाकरीता ऑईली स्पॉट (तेलकट डाग), मर, शॉट होल बोअरर, फळे पोखरणारी अळी, फुलकिडे, केळी पिकाकरीता सिगाटोका (करपा), संत्रा व मोसंबी पिकासाठी काळी पांढरी माशी, सायला, लिफ माईनर, फायटोथोरा त्याचप्रमाणे चिकू फळपिकासाठी बी-पोखरणारी अळी, फळे पोखरणारी अळी, फळगळ या किड/ रोगांवर मुख्य भर देण्यात आला आहे. सन २०१४-१५ मध्ये राबविण्यात येणा-या कीड रोग सर्वेक्षण, व्यवस्थापन व सनियंत्रण प्रकल्पामध्ये तालुकानिहाय कीड सर्वेक्षणासाठी आवश्यक कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट), कृषि पर्यवेक्षक (पेस्ट मॉनिटर) व संगणक प्रचालक (डेटा ऍन्ट्री ऑपरेटर) यांची संख्या निर्धारित करण्यात आलेली आहे. त्याची माहिती खालीलप्रमाणे :

| अ.क्र | फळपिक       | जिल्हा     | किड सर्वेक्षक | संगणक प्रचालक | पेस्ट मॉनिटर (कृषि पर्यवेक्षक) |
|-------|-------------|------------|---------------|---------------|--------------------------------|
| १     | आंबा        | ठाणे       | ३             | १             | १                              |
| २     |             | रायगड      | ८             | १             | १                              |
| ३     |             | रत्नागिरी  | २८            | ३             | ३                              |
| ४     |             | सिंधुदुर्ग | ९             | १             | १                              |
| ५     |             | बीड        | ३             | २             | २                              |
| ६     |             | उस्मानाबाद | १             | १             | १                              |
| ७     |             | औरंगाबाद   | २             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b> |            | <b>५४</b>     | <b>१०</b>     | <b>१०</b>                      |
| ८     | डाळींब      | नाशिक      | ९             | १             | १                              |
| ९     |             | सांगली     | २             | १             | १                              |
| १०    |             | सोलापूर    | १४            | २             | २                              |
| ११    |             | अहमदनगर    | २             | १             | १                              |
| १२    |             | सातारा     | १             | १             | १                              |
| १३    |             | औरंगाबाद   | ४             | २             | २                              |
| १४    |             | बीड        | १             | १             | १                              |
| १५    |             | धुळे       | १             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b> |            | <b>३४</b>     | <b>१०</b>     | <b>१०</b>                      |
| १६    | केळी        | जळगाव      | १९            | २             | २                              |
| १७    |             | नांदेड     | ४             | १             | १                              |
| १८    |             | सोलापूर    | २             | २             | २                              |
| १९    |             | हिंगोली    | २             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b> |            | <b>२७</b>     | <b>६</b>      | <b>६</b>                       |
| २०    | संत्रा      | अमरावती    | ३१            | ५             | ५                              |
| २१    |             | बुलढाणा    | १             | १             | १                              |
| २२    |             | वर्धा      | २             | १             | १                              |
| २३    |             | नागपूर     | ८             | २             | २                              |
| २४    |             | अकोला      | १             | १             | १                              |
| २५    |             | वाशिम      | ४             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b> |            | <b>४७</b>     | <b>११</b>     | <b>११</b>                      |
| २६    | मोसंबी      | औरंगाबाद   | १४            | ३             | ३                              |
| २७    |             | बीड        | १             | १             | १                              |

| अ.क्र | फळपिक     | जिल्हा | किड सर्वेक्षक | संगणक प्रचालक | पेस्ट मॉनिटर (कृषि पर्यवेक्षक) |
|-------|-----------|--------|---------------|---------------|--------------------------------|
| २८    |           | जालना  | ११            | २             | २                              |
| २९    |           | नांदेड | ८             | ३             | ३                              |
|       | एकूण      |        | ३४            | ९             | ९                              |
| ३०    | चिक्कू    | ठाणे   | ४             | १             | १                              |
|       | एकूण      |        | ४             | १             | १                              |
|       | एकूण सर्व |        | २००           | ४७            | ४७                             |

तथापि एकूण संख्येच्या अधिन राहून विभागीय कृषि सहसंचालक यांनी जिल्हानिहाय फळपिकाच्या क्षेत्रानुसार कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट) यांचे कार्यक्षेत्र ठरवावे. विभागीय कृषि सहसंचालक / जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांनी योजना राबविण्यासाठी पिकनिहाय व तालुकानिहाय समूह ठरवून सर्वसाधारणपणे कमीत कमी ५०० व जास्तीत जास्त २००० हेक्टरसाठी १ किड सर्वेक्षक असे गृहीत धरून नियुक्ती करावी. ज्याठिकाणी एकापेक्षा जास्त पिके योजनेतर्गत घ्यावयाची आहेत त्यामध्ये दोन पिकासाठी एक किड सर्वेक्षक नियुक्त करावा. किड सर्वेक्षक व संगणक चालक यांची नियुक्ती आऊटसोर्सिंगद्वारे कंत्राटी तत्वावर सन २०१३-१४ च्या मार्गदर्शक सूचनेप्रमाणेच महाराष्ट्र उद्योजकता विकास केंद्रामार्फत करण्यात यावी. त्यासाठी संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालक यांनी जिल्हानिहाय लागणा-या किड सर्वेक्षक व संगणक चालक यांची माहिती योजनेचा कालावधी सुरु होण्यापूर्वी किमान एक महिना अगोदर संबंधित संस्थेस देण्यात यावी व नियुक्ती वेळेत होईल याबाबतची दक्षता घेण्यात यावी..

#### ४. कार्यपध्दती :-

सदर कार्यक्रमात खालील बाबींवर भर द्यावयाचा आहे.

- ४.१ कीड-रोगांचे सर्वेक्षण, सल्ला व व्यवस्थापन पध्दती
- ४.२ शेतक-यांमध्ये कीड-रोगांबाबत जागरूकता निर्माण करणे
- ४.३ आपत्कालीन परिस्थितीत कीड - रोगांच्या व्यवस्थापनासाठी पीक संरक्षण औषधांचा पुरवठा करणे

राज्यपातळीवर आयुक्त (कृषि) यांच्या अध्यक्षतेखाली सुकाणू समिती (स्टिअरिंग कमिटी) या प्रकल्पाच्या संपूर्ण नियोजन व सनियंत्रणासाठी स्थापन करण्यात आली असून यामध्ये विविध केंद्र व राज्य शासनाच्या कृषि संशोधन व विस्तार क्षेत्रातील संस्थांचा सहभाग आहे. राज्यस्तरीय सुकाणू समिती (स्टिअरिंग कमिटी) खालील प्रमाणे राहिल.

| अ.क्र | सहभागी संस्था   | प्रतिनिधी  | पद        |
|-------|---|--|-----------|
| १     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य  | श्री. उमाकांत दांगट (भाप्रसे),<br>आयुक्त, (कृषि), महाराष्ट्र राज्य | अध्यक्ष   |
| २     | राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र,<br>नवी दिल्ली (एनसीआयपीएम) (भारतीय<br>कृषि संशोधन परिषद), नवी दिल्ली. | डॉ. चिरंतन चट्टोपाध्याय<br>संचालक, एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली          | सहअध्यक्ष |
| ३     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र शासन   | श्रीमती प्रणाली चिटणीस<br>सहसचिव, फलोत्पादन,                       | सदस्य     |

| अ.क्र | सहभागी संस्था                                       | प्रतिनिधी   | पद    |
|-------|---|---|-------|
|       |   | कृषि व पदुम विभाग, मंत्रालय, मुंबई  |       |
| ४     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                        | डॉ. एस. एस. अडसूळ<br>संचालक, विस्तार व प्रशिक्षण,<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे                           | सदस्य |
| ५     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                        | डॉ. डी. जी. बकवाड<br>संचालक, फलोत्पादन,<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे                                     | सदस्य |
| ६     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                        | श्री. जे. व्ही. देशमुख,<br>संचालक, निविष्टा व गुणनियंत्रण,<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे                  | सदस्य |
| ७     | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                        | डॉ. डी. जी. बकवाड<br>संचालक, प्रकिया व नियोजन,<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे                              | सदस्य |
| ८     | राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर<br>(डाळींब) | डॉ. आर. के. पाल,<br>संचालक, राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र,<br>सोलापूर  | सदस्य |
| ९     | राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र, नागपूर,        | एम. एस. लाडानिया<br>संचालक, राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र,<br>नागपूर,   | सदस्य |
| १०    | भारतीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली<br>(केळी)  | डॉ. आर. थंगवेल्लू,<br>वरिष्ठ संशोधक, वनस्पती रोगशास्त्र,<br>भारतीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली                  | सदस्य |
| ११    | महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहूरी                 | डॉ. सी. ए. देवकर<br>विभाग प्रमुख, किटकशास्त्र विभाग,<br>महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ,<br>राहूरी, जि. अहमदनगर           | सदस्य |
| १२    | महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहूरी                 | डॉ. जी. जी. जाधव<br>विभाग प्रमुख, वनस्पती रोगशास्त्र विभाग,<br>महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहूरी,<br>जि. अहमदनगर    | सदस्य |
| १३    | डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि<br>विद्यापीठ, दापोली  | डॉ. एस.के.गोडसे,<br>सहयोगी प्राध्यापक, किटकशास्त्र विभाग,<br>डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि<br>विद्यापीठ, दापोली       | सदस्य |
| १४    | डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि<br>विद्यापीठ, दापोली  | डॉ. अनंत नरंगलकर,<br>विभाग प्रमुख,<br>वनस्पती रोगशास्त्र विभाग,<br>डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि<br>विद्यापीठ, दापोली | सदस्य |
| १५    | डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ,<br>अकोला        | डॉ. उंदीरवाड<br>विभाग प्रमुख,   | सदस्य |

| अ.क्र | सहभागी संस्था   | प्रतिनिधी  | पद                  |
|-------|---|--|---------------------|
|       |   | कितकशास्त्र विभाग,<br>डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ,<br>अकोला                               |                     |
| १६    | डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ,<br>अकोला            | डॉ. एस. एस. माने<br>विभाग प्रमुख,<br>वनस्पती रोगशास्त्र विभाग,<br>मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी | सदस्य               |
| १७    | मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी                          | विभाग प्रमुख,<br>कितकशास्त्र विभाग,<br>मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी                            | सदस्य               |
| १८    | मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी                          | डॉ. ध्रुतराज<br>विभाग प्रमुख,<br>वनस्पती रोगशास्त्र विभाग,<br>मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी     | सदस्य               |
| १९    | फळ संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला<br>(आंबा)                   | डॉ. पुष्पा पाटील<br>प्रभारी अधिकारी,<br>फळ संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला, जि. सिंधुदुर्ग              | सदस्य               |
| २०    | संशोधन केंद्र, पालघर<br>(चिकू)                          | कनिष्ठ कितकशास्त्रज्ञ, संशोधन केंद्र,<br>पालघर   | सदस्य               |
| २१    | केळी संशोधन केंद्र जळगाव                                | डॉ. एन.बी.शेख,<br>उद्यानविद्यावेत्ता,<br>केळी संशोधन केंद्र जळगाव                                | सदस्य               |
| २२    | राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र,<br>नवी दिल्ली | डॉ. देशबंधु आहुजा<br>प्रमुख शास्त्रज्ञ, एनसीआयपीएम,<br>नवी दिल्ली                                | सदस्य               |
| २३    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. पी. बी. अडगळे,<br>कृषि सहसंचालक, फलोत्पादन,<br>कृषि आयुक्तालय, पुणे ० ५                    | तांत्रिक<br>समन्वयक |
| २४    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. व्ही. बी. इंगळे,<br>विभागीय कृषि सहसंचालक,<br>कोकण विभाग, ठाणे                             | सदस्य               |
| २५    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. एस.एल. जाधव<br>विभागीय कृषि सहसंचालक,<br>पुणे विभाग, पुणे                                  | सदस्य               |
| २६    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. डी.जी. काळाणे,<br>विभागीय कृषि सहसंचालक,<br>नाशिक विभाग, नाशिक                             | सदस्य               |
| २७    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. एन.टी. शिसोदे,<br>विभागीय कृषि सहसंचालक,<br>कोल्हापूर विभाग, कोल्हापूर                     | सदस्य               |
| २८    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य                            | श्री. रविंद्र माने,<br>कृषि उपसंचालक, (प्रकल्प),   | सदस्य               |

| अ.क्र | सहभागी संस्था                | प्रतिनिधी   | पद            |
|-------|------------------------------|---|---------------|
|       |                              | कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे  |               |
| २९    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य | श्री. अनिल देशमुख,<br>कृषि उपसंचालक, (माहिती)<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे | सदस्य         |
| ३०    | कृषि विभाग, महाराष्ट्र राज्य | श्री. विजयकुमार राऊत,<br>कृषि उपसंचालक, फलो-२<br>कृषि आयुक्तालय, महाराष्ट्र राज्य, पुणे | सदस्य<br>सचिव |

**५ संस्थानिहाय जबाबदा-या :-**

वरील संस्थांमधून प्रत्येकी एका प्रतिनिधीची नियुक्ती करण्यात आली आहे. सदर सदस्यांनी त्यांना सोपवून दिलेल्या पुढीलप्रमाणे जबाबदा-या / कर्तव्य पार पाडणे अपेक्षित आहे.

**५.१ राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र, भारतीय कृषि संशोधन परिषद, नवी दिल्ली.:-**

- ५.१.१ ऑनलाईन माहिती भरण्यासाठी संगणक प्रणाली तयार करणे व त्याचे व्यवस्थापन करणे
- ५.१.२ जीआयएस प्रणाली तयार करणे व त्याचे व्यवस्थापन करणे.
- ५.१.३ जी.आय.एस. आधारीत कीड रोगांचे स्वयंचलित नकाशे प्रणालीचे व्यवस्थापन करणे
- ५.१.४ ऑनलाईन डेटा भरण्यासाठी सर्वेक्षण प्रपत्रे छपाई करणे व वितरीत करणे.
- ५.१.५ कीड रोग संरक्षण व सल्ला बाबतचे ऑनलाईन यंत्रणेचे व्यवस्थापन करणे, कीड / रोगांबाबत शास्त्रीय सल्ला देणे
- ५.१.६ कीड रोग सर्वेक्षण व सल्ला चमुला सर्वेक्षण कीटचा पुरवठा करणे.
- ५.१.७ कीड रोग सर्वेक्षण व सल्ला चमुला प्रशिक्षण व मदत करणे
- ५.१.८ संपुर्ण प्रकल्पाचे तांत्रिक सनियंत्रण करणे

**५.२ राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली / केळी संशोधन केंद्र, जळगाव**

- ५.२.१ केळी पिकासाठी एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करणे, सल्ला देणे.
- ५.२.२ भविष्यात उदभवणा-या किडरोगांवर संशोधन करण्यासाठी माहिती संकलीत करणे व एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करण्यासाठी शेतक-यांकडून माहिती घेणे.
- ५.२.३ किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला कामामध्ये वेळच्या वेळी सनियंत्रण करून योग्य ते मार्गदर्शन करणे.
- ५.२.४ किड रोगाचे तिव्रतेचे सनियंत्रण ऑनलाईन अहवालावरून करणे व आपत्कालीन परिस्थितीत क्षेत्रीय भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे.
- ५.२.५ प्रकल्पातील केळी पिकाचे सर्वेक्षण, उपाययोजना व संशोधनात्मक बाबींवर अहवाल देणे.

**५.३ राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर**



- ५.३.१ डाळींब पिकासाठी एकात्मिक किड व्यवस्थापनावर आधारीत पीक संरक्षण पध्दती तयार करणे, सल्ला देणे.
- ५.३.२ भविष्यात उदभवणा-या किडरोगांवर संशोधन करण्यासाठी माहिती संकलीत करणे व एकात्मिक किड व्यवस्थापन पध्दती तयार करण्यासाठी शेतक-यांकडून माहिती घेणे.
- ५.३.३ किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला कामामध्ये वेळच्या वेळी संनियंत्रण करून योग्य ते मार्गदर्शन करणे.
- ५.३.४ किड रोगाचे तिव्रतेचे संनियंत्रण ऑनलाईन अहवालावरून करणे व आपत्कालीन परिस्थितीत क्षेत्रीय भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे.
- ५.३.५ प्रकल्पामधील डाळींब पिकाचे सर्वेक्षण, उपाययोजना व संशोधनात्मक बाबी यावर अहवाल देणे.

#### ५.४ राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय फळ संशोधन केंद्र, नागपूर

- ५.४.१ संत्रा / मोसंबी पिकांसाठी एकात्मिक किड व्यवस्थापनावर आधारीत पीक संरक्षण पध्दती तयार करणे, सल्ला देणे.
- ५.४.२ भविष्यात उदभवणा-या किडरोगांवर संशोधन करण्यासाठी माहिती संकलीत करणे व एकात्मिक किड व्यवस्थापन पध्दती तयार करण्यासाठी शेतक-यांकडून माहिती घेणे.
- ५.४.३ किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला कामामध्ये वेळच्या वेळी संनियंत्रण करून योग्य ते मार्गदर्शन करणे.
- ५.४.४ किड रोगाचे तिव्रतेचे संनियंत्रण ऑनलाईन अहवालावरून करणे व आपत्कालीन परिस्थितीत क्षेत्रीय भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे.
- ५.४.५ प्रकल्पामधील संत्रा / मोसंबी पिकांचे सर्वेक्षण, उपाययोजना व संशोधनात्मक बाबी यावर अहवाल देणे.

#### ५.५ कृषि विभाग:-

- ५.५.१ कीड सर्वेक्षणासाठी योग्य कृषि पर्यवेक्षकांची नावे निश्चीत करून त्यांची उपलब्धता करून घेणे, तसेच कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट), संगणक प्रचालक (डेटा ऍन्ट्री ऑपरेटर) संगणक प्रणाली मदतनीस, संगणक चालक व लेखापाल यांच्या सेवा पुरवठादार ठेकेदारांकडून (Placement Agencies) नेमणुका करून घेणे व अनुषंगिक जबाबदा-या पार पाडणे.
- ५.५.२ कृषि विभागातील कर्मचा-यांना प्रशिक्षण देणे.
- ५.५.३ एकात्मिक कीड व्यवस्थापनावर आधारीत कीड व्यवस्थापन पध्दतीचे शेतक-यांना प्रशिक्षण देणे.
- ५.५.४ एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दतीचा एसएमएस यंत्रणा, भिक्तीपत्रके, घडीपत्रीका, आकाशवाणी, दुरदर्शन, वृत्तपत्र व इतर प्रसारमाध्यमांद्वारे प्रचार व प्रसार करणे.
- ५.५.५ गावनिहाय किडरोगाची तिव्रता उपविभागस्तरावरून तपासणे व त्याची माहिती ऑनलाईन उपलब्ध करून देणे.
- ५.५.६ आपत्कालीन परिस्थितीतील किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला याद्वारे किडरोगांबाबत शेतक-यांना एसएमएसद्वारे संदेश देणे.
- ५.५.७ शेतक-यांमध्ये जनजागृती करून कीड/रोग व्यवस्थापनासाठी उपाययोजना करणे.
- ५.५.८ आपत्कालीन परिस्थितीत कीड रोगांच्या व्यवस्थापनासाठी ५० टक्के अनुदानावर पीक संरक्षण औषधांचा/साहित्याचा पुरवठा करणे, अन्य योजनांमध्ये पिक संरक्षण बाबींचे अनुदान सर्वेक्षणाधारीत किडरोगांचे तिव्रतेप्रमाणे शेतक-यांना उपलब्ध करून देणे.

## ५.६ कृषि विद्यापीठे :-

१. महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहूरी
  २. डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली
  ३. मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी
  ४. डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला
- ५.६.१ जिल्हानिहाय कृषि विभागातील मास्टर ट्रेनर्स, कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट), कृषि पर्यवेक्षक (पेस्ट मॉनिटर) व संगणक प्रचालक (डेटा एंट्री ऑपरेटर) यांना प्रशिक्षण देणे
- ५.६.२ जिल्हानिहाय किडरोग सर्वेक्षणांचेबाबत कृषि विद्यापीठाचे जिल्हा समन्वयकामार्फत संपर्क ठेवून आढावा घेणे. जिल्हा समन्वयकांनी त्यांना उपलब्ध करून दिलेल्या अनुदानातून जिल्ह्यामध्ये क्षेत्रीय भेटी देऊन प्रकल्पाचे कामाचा तांत्रिक आढावा घेणे व त्यानुसार विद्यापीठ आणि कृषि विभाग यांना अहवाल देणे.
- ५.६.३ कीडरोग सर्वेक्षण व एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दतीच्या कामात तांत्रिक मदत करणे
- ५.६.४ कृषि विद्यापीठाकडे उपलब्ध करून देण्यात आलेल्या संशोधन सहयोगी यांच्या मदतीने तालुकानिहाय ऑनलाईन वेबसाईटवर भरण्यात आलेल्या किडरोग सर्वेक्षण अहवालावर आधारीत माहितीचे विश्लेषण करणे व किडरोगाचे तालुकानिहाय एसएमएससाठी तसेच जाहीर निवेदनासाठी सल्ला व उपाययोजना, ऑनलाईन वेबसाईटवर आठवडयातून दोनदा (दर सोमवार व गुरुवार) उपलब्ध करून देणे.
- ५.६.५ कृषि विद्यापीठ कार्यक्षेत्रातील किडरोगाचे तीव्रतेवर लक्ष ठेवून तीव्रता वाढणा-या व वाढलेल्या ठिकाणी भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे व अहवाल कृषि आयुक्तालयास देणे.
- ५.६.६ कृषि विद्यापीठ कार्यक्षेत्रातील कृषि विज्ञान केंद्राच्या सेवा या प्रकल्पासाठी उपलब्ध करून घेणे, त्यांचा सहभाग वाढवून शेतक-यांना संपर्क व मार्गदर्शन करणे.
- ## ५.७ विभागीय फळसंशोधन, केंद्र वेंगुर्ला
- ५.७.१ आंबा पिकासाठी एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करणे, सल्ला देणे.
- ५.७.२ भविष्यात उदभवणा-या किडरोगांवर संशोधन करण्यासाठी माहिती संकलीत करणे व एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करण्यासाठी शेतक-यांकडून माहिती घेणे.
- ५.७.३ किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला कामामध्ये वेळच्या वेळी संनियंत्रण करून योग्य ते मार्गदर्शन करणे.
- ५.७.४ किड रोगाचे तीव्रतेचे संनियंत्रण ऑनलाईन अहवालावरून करणे व आपत्कालीन परिस्थितीत क्षेत्रीय भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे.
- ५.७.५ प्रकल्पातील आंबा पिकाचे सर्वेक्षण, उपाययोजना व संशोधनात्मक बाबींवर अहवाल देणे.
- ५.७.६ आंबा पिकावरील फळमाशी नियंत्रणाकरीता खास मोहिम राबविणे.
- ५.७.७ आंबा पिकाकरीता कोकण विभागासाठी फळमाशीकरीता घोषित करण्याकरीता कार्यवाही करणे.
- ## ५.८ चिकू संशोधन केंद्र, पालघर
- ५.८.१ चिकू पिकासाठी एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करणे, सल्ला देणे.

- ५.८.२ भविष्यात उदभवणा-या किडरोगांवर संशोधन करण्यासाठी माहिती संकलीत करणे व एकात्मिक कीड व्यवस्थापन पध्दती तयार करण्यासाठी शेतक-यांकडून माहिती घेणे.
- ५.८.३ किडरोग सर्वेक्षण व सल्ला कामामध्ये वेळच्या वेळी संनियंत्रण करून योग्य ते मार्गदर्शन करणे.
- ५.८.४ किड रोगाचे तिव्रतेचे संनियंत्रण ऑनलाईन अहवालावरून करणे व आपत्कालीन परिस्थितीत क्षेत्रीय भेटी देऊन उपाययोजना सुचविणे.
- ५.८.५ प्रकल्पातील चिकू पिकाचे सर्वेक्षण, उपाययोजना व संशोधनात्मक बाबींवर अहवाल देणे.

#### ५.९ कृषि विज्ञान केंद्र

- ५.९.१ कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांमार्फत योग्य प्रकारे सर्वेक्षण होण्यासाठी त्यांचेवर देखरेख ठेवणे.
- ५.९.२ आठवड्यातील दोन दिवसांत प्रत्येक जिल्ह्यातील कार्यरत कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयी हजर असलेबाबत खात्री करणे.
- ५.९.३ कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांचेकडून कीड रोग सर्वेक्षणाचे काम तांत्रिक दृष्ट्या योग्य प्रकारे होत असल्याबाबतची खात्री करणे.
- ५.९.४ कीड रोग सर्वेक्षणाबाबत कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांना मार्गदर्शन करणे.
- ५.९.५ कीड रोग सर्वेक्षणाबाबत कृषि विभागाच्या क्रॉपसॅपप्रमाणे विहित प्रपत्रातील अहवाल फलोत्पादन विभागास सादर करणे.

#### ६ सर्वेक्षण कार्यपध्दती :-

आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांसाठी राज्याच्या ९ जिल्ह्यातील कृषि विभागाच्या एकूण ५८ उपविभागात सुमारे २०० कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट) यांच्यामार्फत किडरोगांच्या विविध अवस्थांची सापळे व अन्य साधनांच्या मदतीने निरीक्षणे नोंदवतील. ही नोंदवलेली निरीक्षणे दर बुधवारी व शनिवारी आंबा, डाळींब व केळी पिकासाठी ४७ कृषि पर्यवेक्षक (पेस्ट मॉनिटर) संगणक प्रचालक (डेटा एंट्री ऑपरेटर) यांच्या मदतीने संगणक प्रणाली मध्ये ऑनलाईन वेबसाईटवर भरण्यात येतील. वेबसाईटवरील या निरीक्षणांचे विश्लेषण राष्ट्रीय एकात्मिक कीड व्यवस्थापन केंद्र (भारतीय कृषि संशोधन परिषद), नवी दिल्ली यांचे मार्गदर्शनाखाली करून राज्यातील संबंधित कृषि विद्यापीठांचे शास्त्रज्ञ वेबसाईटवर ऑनलाईन तालुकानिहाय उपाय योजना सुचवतील. या उपाययोजनांच्या आधारे शेतक-यांना दुरदर्शन, आकाशवाणी, एसएमएस, वृत्तपत्रे इत्यादी प्रसिध्दी माध्यमांद्वारे मार्गदर्शन केले जाईल. या मार्गदर्शनानुसार शेतक-यांना वेळच्या वेळी उपाययोजना करून कीड रोग नियंत्रण करता येईल.

सदर प्रकल्पात आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकांकरीता कमीत कमी ५०० व जास्तीत जास्त २००० हेक्टरसाठी १ कीड सर्वेक्षक याप्रमाणे पिकांच्या सर्वेक्षणासाठी कीड सर्वेक्षकांची नेमणूक करावी.

वरीलप्रमाणे नियुक्त दहा कीड सर्वेक्षकांचे (पेस्ट स्काऊट) संनियंत्रण एका कृषि पर्यवेक्षक (पेस्ट मॉनिटर) यांचेमार्फत करावयाचे आहे तसेच नेमून दिलेल्या क्षेत्रापैकी काही गांवे रॅन्डम पध्दतीने सर्वेक्षणाकरीता निश्चित करून कृषि पर्यवेक्षकामार्फत रॅन्डम पध्दतीने सर्वेक्षण करावयाचे आहे. याबाबत सविस्तर माहिती प्रशिक्षणामध्ये संबंधितांना देण्यात येईल. एकूण संख्येच्या अधिन राहून विभागीय कृषि सहसंचालकांनी फळपिकाखालील क्षेत्रानुसार कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट) यांचे कार्यक्षेत्र ठरवावे व त्याप्रमाणे नेमणूक कराव्यात.

#### ६.१ पिकनिहाय सर्वेक्षण करावयाचे कीड रोग:-

या प्रकल्पात पुढीलप्रमाणे कीड रोगांचे सर्वेक्षण व सनियंत्रण करावयाचे आहे

|                 |   |
|-----------------|---|
| आंबा            | :- तुडतुडे, भूरी, फुलकिडे, फळमाशी (सापळ्यासहीत), करपा     |
| डाळींब          | :- तेलकट डाग, मर, फळे पोखरणारी अळी, फुलकिडे, शॉट होल बोअर |
| केळी            | :- सिगाटोका (करपा)  |
| संत्रा व मोसंबी | :- काळी पांढरी माशी, सायला, लिफ माईनार, फायटोथोरा         |
| चिकू            | :- बी-पोखरणारी अळी, फळे पोखरणारी अळी, फळगळ                |

## ६.२ सर्वेक्षणासाठी पिकनिहाय कालावधी-

| अ.क्र. | पिक    | सर्वेक्षणाचा कालावधी            |
|--------|--------|---------------------------------|
| १      | आंबा   | १५ नोव्हेंबर २०१४ ते ३१ मे २०१५ |
| २      | डाळींब | १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५      |
| ३      | केळी   | १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५      |
| ४      | संत्रा | १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५      |
| ५      | मोसंबी | १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५      |
| ६      | चिकू   | १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५      |

## ६.३ कीड सर्वेक्षकांसाठी गाव व सर्वेक्षण क्षेत्राची निवड:-

### ६.३.१ आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू :-

- ६.३.१.१ गावनिवडीकरिता प्रत्येक तालुक्यातील आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकाखालील गावनिहाय क्षेत्र निश्चित करण्यात यावे.
- ६.३.१.२ ज्याठिकाणी आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकांचे सर्वेक्षण होणार असेल त्याठिकाणी सदर पिकांखालील कमीत कमी ५०० व जास्तीत जास्त २००० हेक्टरप्रमाणे गावांचे गट समूह पध्दतीने तयार करण्यात यावेत व प्रत्येक कीड सर्वेक्षकाला सदर क्षेत्र सर्वेक्षणाकरिता नेमून द्यावे.
- ६.३.१.३ वरीलप्रमाणे निश्चित केलेल्या गावांच्या गटातील आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकाखालील जास्तीत जास्त क्षेत्र असणा-या ८ गावांची अथवा गावांच्या गटांची निवड करण्यात यावी. याकरीता सर्वसाधारणपणे आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकाचे २५० हेक्टर क्षेत्र असणारे गाव अथवा गावांचा गट यामध्ये सदर २००० हेक्टरची विभागणी करण्यात यावी.
- ६.३.१.४ २५० हेक्टर क्षेत्र असणा-या गावामधून अथवा गावांच्या गटामधून चार निश्चित व चार रॅन्डम प्लॉटची सर्वेक्षणाकरिता निवड करण्यात यावी. जर एकाच गावात २००० हेक्टर क्षेत्र असल्यास अशा वेळी आठ निश्चित व आठ रॅन्डम प्लॉटची सदर गावामधून निवड करण्यात यावी व त्या संबंधीत एकाच गावात कीड सर्वेक्षक संपूर्ण दिवस सर्वेक्षण करेल. याच पध्दतीने प्रति ५०० ते २००० हेक्टर क्षेत्राचे गाव अथवा गावांच्या गटामधून चार निश्चित व चार रॅन्डम प्लॉटची निवड करण्यात यावी. ज्यावेळी गावांमधील क्षेत्र २००० हेक्टर पर्यंत नसेल अशा वेळी जास्तीत जास्त क्षेत्र असणारी गावे विचारात घ्यावीत. गावांची निवड करताना निवडलेली गावे सदर गटाचे प्रतिनिधीत्व करतील याची काळजी घ्यावी.

६.३.१.५ ज्या तालुक्यांमध्ये आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकाखालील क्षेत्र अत्यंत कमी असेल अशावेळी कीड सर्वेक्षकाने फक्त धावते सर्वेक्षण (Roving Survey) करावे.

- कीड सर्वेक्षकाने एकमेकांच्या विरुद्ध दिशेला असणा-या निश्चित प्लॉटची निवड करावी तसेच त्यांचे अक्षांश व रेखांशाची नोंद करावी.
- कीड सर्वेक्षकाने निश्चित प्लॉटच्या विरुद्ध दिशेकडील प्लॉटची रॅन्डम प्लॉट म्हणून निवड करावी. कीड सर्वेक्षकाने रॅन्डम प्लॉटची निवड कोणत्याही विशिष्ट हेतूने न करता पूर्णतः रॅन्डम पध्दतीने करावी.
- प्रत्येक कीड सर्वेक्षकाने आठवडयातील प्रत्येक सोमवार, मंगळवार व गुरुवार, शुक्रवार दोन गावे प्रति दिन असे एकूण प्रति आठवडा ८ गावांचे सर्वेक्षण करावे.
- कीड सर्वेक्षक सर्वेक्षण करावयाच्या प्रत्येक दिवशी प्रत्येक गावात चार निश्चित व चार रॅन्डमचे प्लॉटचे सर्वेक्षण करेल.

#### ६.४ कृषि पर्यवेक्षकांसाठी गाव व सर्वेक्षण क्षेत्राची निवड:-

- ६.४.१ कीड सर्वेक्षकाने सर्वेक्षण करावयाच्या निश्चित प्लॉटच्या अक्षांश व रेखांशाची कृषि पर्यवेक्षकाने जीपीएस उपकरणाद्वारे वाचने घेऊन सदर नोंद कीड सर्वेक्षकाच्या सर्वेक्षण प्रपत्रात नोंद होईल असे पहावे.
- ६.४.२ प्रत्येक तालुक्यामधील जी गावे कीड सर्वेक्षकांमार्फत कीड रोग सर्वेक्षणासाठी निवडण्यात आली नाहीत त्यांची यादी करण्यात यावी आणि अशा गावांचे कृषि पर्यवेक्षकामार्फत धावते सर्वेक्षण (Roving Survey) करण्यात यावे.
- ६.४.३ कृषि पर्यवेक्षकाने चार वेगवेगळ्या मार्गावर गोलाकार सर्वेक्षण दौ-याचा कार्यक्रम (साधारण १०० ते १५० कि.मी.) तयार करावा. यासाठी कीड सर्वेक्षकाकडून सर्वेक्षण न झालेले दूरचे/दुर्गम क्षेत्र विचारात घेणेत यावे. तसेच सदर दौ-यासाठीचा मार्ग ठरविताना त्याच्याकडील संपूर्ण कार्यक्षेत्राचा चार सर्वेक्षण मार्गांमध्ये अंतर्भाव होईल याची काळजी घ्यावी.
- ६.४.४ कृषि पर्यवेक्षकाने वरील मार्गावरच सोमवार, मंगळवार, गुरुवार व शुक्रवारी धावते सर्वेक्षण करावे.
- ६.४.५ वरील चार दिवसांच्या कार्यक्रमातील प्रत्येक दिवशी कृषि पर्यवेक्षक ५ ते ७ प्लॉटचे निश्चित कीडींसाठी संख्यात्मक सर्वेक्षण तर इतर सर्व कीडींसाठी गुणात्मक सर्वेक्षण करेल (५ ते ८ गावांमधील). त्याचबरोबर सदर मार्गावरील कीड सर्वेक्षकांच्या (१ ते २ कीड सर्वेक्षक) प्लॉटमधील उपस्थितीबाबत/कार्यरत असल्याबाबत खात्री करेल.
- ६.४.६ सदर सर्वेक्षण दौ-याचा कार्यक्रम (चार मार्ग), सर्वेक्षण प्रपत्रे, भेट दिलेल्या कीड सर्वेक्षकांची संख्या याबाबतचा सविस्तर तपशिल प्रत्येक कृषि पर्यवेक्षकाने अद्ययावत ठेवावा.
- ६.४.७ कृषि पर्यवेक्षकाने त्याच्या कार्यक्षेत्रातील सर्व कीड सर्वेक्षकांचे भ्रमणध्वनी क्रमांक, त्यांच्या प्रत्येक दिवसाचा कार्यक्रम, ते भेट देणार असलेल्या गावांची यादी स्वतःजवळ ठेवावी. व सदर यादी उपविभागीय कृषि अधिकारी व कृषि विज्ञान केंद्रांना उपलब्ध करून द्यावी जेणेकरून त्यांचे अचानक भेटीद्वारे (Surprise Visits) सनियंत्रण करता येईल.
- ६.४.८ धावते सर्वेक्षणादरम्यान सर्वेक्षणाचे क्षेत्र निवडताना कीड रोगाच्या अचानक प्रादुर्भावाबाबत (असल्यास) शेतक-यांकडील मिळालेल्या माहितीचा विचार करावा.

## ७. प्रशिक्षण कार्यक्रम

७.१ कृषि पर्यवेक्षक व कीड सर्वेक्षक यांना सर्वेक्षणाचे प्रशिक्षण :- किडरोगाचे सर्वेक्षण, त्याच्या पध्दती, किडरोगांची ओळख, त्यांचा जीवनक्रम, हवामानावर आधारीत कीड रोगांचा प्रादुर्भाव तसेच किडरोगनिहाय उपाययोजना याबाबतचे संबंधीत कृषि विद्यापीठात प्रशिक्षण आयोजित करावयाचे आहे. सर्वेक्षणासाठी निवड केलेल्या कृषि पर्यवेक्षक व कीड सर्वेक्षक यांना हंगाम सुरु होण्यापूर्वी आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकांसाठी दोन दिवस कीड रोग सर्वेक्षणाचे प्रशिक्षण देण्यात यावे. प्रशिक्षण कार्यक्रम खालीलप्रमाणे

| अ.क्र. | पिक    | जिल्हा  | प्रशिक्षणाचे ठिकाण   |
|--------|--------|---|--|
| १.     | आंबा   | ठाणे, रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, बीड, उस्मानाबाद, औरंगाबाद | डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ दापोली   |
| २.     | डाळींब | अहमदनगर, सोलापूर, नाशिक, सांगली, सातारा, औरंगाबाद, बीड, धुळे  | महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी  |
| ३.     | केळी   | जळगाव, नांदेड, सोलापूर, हिंगोली                               | केळी संशोधन केंद्र, जळगाव  |
| ४.     | संत्रा | अमरावती, बुलढाणा, वर्धा, अकोला, नागपूर, वाशिम                 | १) राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र, नागपूर<br>२) डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला                                  |
| ५.     | मोसंबी | औरंगाबाद, बीड, जालना, नांदेड                                  | १) राष्ट्रीय लिंबुवर्गीय संशोधन केंद्र, नागपूर<br>२) डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला / मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, परभणी |
| ६.     | चिकू   | ठाणे,   | १) डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ दापोली<br>२) संशोधन केंद्र, पालघर   |

प्रशिक्षणासाठीचा खर्च प्रादेशिक कृषि विस्तार व्यवस्थापन प्रशिक्षण संस्था (रामेती) अंतर्गत मान्य प्रमाणकांनुसार खर्च करावा.

**रु. ३५०/- प्रति प्रशिक्षणार्थी प्रति दिन याप्रमाणे दोन दिवसांकरिता एकूण रु. ७००/-**

७.२ जनजागरण प्रशिक्षण:- शेतक-यांमध्ये जागरुकता निर्माण करण्याकरिता क्षेत्रीय पातळीवरील अधिकारी व कर्मचा-यांना अद्ययावत कीड व्यवस्थापनाचे प्रशिक्षण देण्यात यावे. या करीता कृषि विभागाचे उपविभागीय कृषि अधिकारी व प्रति जिल्हा दहा मास्टर ट्रेनर्स तसेच जिल्हा पातळीवरील कृषि विद्यापीठाचे समन्वयक यांचेसाठी हंगामापूर्वी दोन दिवसाचे प्रशिक्षण संबंधित कृषि विद्यापीठामध्ये आयोजित करण्यात यावे. या मास्टर ट्रेनर्सद्वारे कृषि विभागातील जिल्ह्यांमधील सर्व तांत्रिक अधिकारी/कर्मचारी प्रशिक्षित करण्यात यावेत. अशा प्रकारे प्रशिक्षण घेतलेल्या अधिकारी/कर्मचा-यांकडून संबंधित तालुक्यातील प्रत्येक गावातील पाच प्रगतशिल शेतक-यांची कीड-रोग उपाय योजनाबाबत एसएमएसद्वारे माहिती देण्याकरिता निवड करावी व निवडलेल्या शेतक-यांना कीड व रोगांचे एकात्मिक कीड नियंत्रण कसे करावे मित्रकिटक, शत्रुकिडीची ओळख याबाबत गांवपातळीवर माहिती देऊन अवगत करावे. निवड केलेल्या शेतक-यांमार्फत गावातील इतर शेतक-यांना उपाययोजनाबाबत माहितीकरिता ग्रामपंचायतीच्या फलकावर माहिती देण्यात यावी.

**७.२.१ मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण :-** शेतक-यांमध्ये जागरूकता निर्माण करण्याकरीता कृषि विभागाचे उपविभागीय कृषि अधिकारी व प्रति जिल्हा दहा मास्टर ट्रेनर्स तसेच कृषि विद्यापीठाचे जिल्हा प्रतिनिधी यांचेसाठी हंगामापूर्वी दोन दिवसांचे प्रशिक्षण संबंधित कृषि विद्यापीठामध्ये आयोजित करण्यात यावे. याकरीता कृषि विद्यापीठाकडून प्रशिक्षण साहित्य व पायाभूत सुविधा उपलब्ध करून घ्याव्यात. प्रशिक्षणासाठी वसंतराव नाईक राज्य कृषि विस्तार व्यवस्थापन प्रशिक्षण संस्था (वनामती) अंतर्गत मान्य प्रमाणकांनुसार खर्च करावा.

**रु. ६००/- प्रति प्रशिक्षणार्थी प्रति दिन याप्रमाणे दोन दिवसांकरीता रु. १२००/-**

**७.२.२ जिल्हा स्तरीय प्रशिक्षण :-** कृषि विद्यापीठात प्रशिक्षित करण्यात आलेल्या मास्टर्स ट्रेनर्स यांचे मार्फत जिल्हास्तरावर सर्व क्षेत्रीय कर्मचा-यांच्या प्रशिक्षणासाठी प्रति जिल्हा तरतूद करण्यात आली आहे. प्रशिक्षणासाठी प्रादेशिक कृषि विस्तार व्यवस्थापन प्रशिक्षण संस्था (रामेती) अंतर्गत मान्य प्रमाणकांनुसार खर्च करावा. **जिल्हा स्तरीय प्रशिक्षणासाठीचे प्रशिक्षण साहित्य संशोधन केंद्र / कृषि विद्यापीठ यांचे कडून तयार करावे व त्यासाठीचा निधी त्यांना हस्तांतरीत करावा.**

**रु. २५०/- प्रति प्रशिक्षणार्थी प्रति दिन याप्रमाणे एक दिवसाकरीता**

**७.२.३ गावनिहाय बैठका:-**गांवातील प्रगतशील शेतक-यांमार्फत त्यांच्या गावातील इतर शेतक-यांबरोबर कृषि विभागाच्या क्षेत्रीय कर्मचा-यांच्या मदतीने प्रति आठवडयास एक याप्रमाणे आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांकरीता हंगामामध्ये दहा छोटया गांव बैठका आयोजित करून शेतक-यांशी चर्चा करावी व शेतक-यांना कीड रोगाचे सर्वेक्षण व उपाययोजनेबाबतची माहिती वेळोवेळी पुरविण्यात यावी.

**७.३ शेतक-यांसाठी पीक संरक्षण सल्ला:-** उपविभागीय कृषि अधिकारी यांनी आठवडयातून दोन वेळा ऑनलाईन प्राप्त होणारी अॅडव्हायजरी मराठी भाषेत एसएमएसद्वारे शेतक-यांना द्यावी. तसेच या अॅडव्हायजरीचा एसएमएस तालुका कृषि अधिकारी यांनाही द्यावा. तालुका कृषि अधिकारी यांनी सदर एसएमएसची मराठी भाषेतील जम्बो झेरॉक्स प्रत तयार करावी. त्यांचे अधिनस्त मंडळ कृषि अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक व कृषि सहाय्यक या क्षेत्रीय कर्मचा-यांच्यामार्फत तालुक्यातील प्रत्येक गावातील कृषि वार्ताफलकावर तसेच कृषिसेवा केंद्रावर लावली जाईल असे पहावे. यासाठी रु. ५ हजार प्रति तालुका याप्रमाणे स्वतंत्र तरतूद करण्यात आली आहे.

तालुकानिहाय प्राप्त होणारी अॅडव्हायजरी शेतक-यांपर्यंत वेळीच पोहोचण्याच्या दृष्टिने उपविभागीय कृषि अधिकारी व विभागीय कृषि सहसंचालक आठवडानिहाय देण्यात येणारी अॅडव्हायजरी, वर्तमानपत्रे, रेडिओ, टि.व्ही. व इतर प्रसिध्दी माध्यमांच्या सहाय्याने प्रसिध्द करावी. तसेच आपत्कालीन परिस्थितीमध्ये कीड रोगांची स्थिती आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या वर गेल्यास अशा वेळी पत्रकार परिषदा, शेतकरी मेळावे घेऊन उपाययोजनांबाबत शेतक-यांमध्ये जनजागृती करावी.

ज्या ठिकाणी कीड रोग परिस्थिती आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या वर असेल त्या ठिकाणी क्किटकनाशकांचा पुरवठा होण्याच्या दृष्टिने युध्दपातळीवर मोहिम हाती घेऊन कीड रोग परिस्थिती नियंत्रणात राहिल यासाठी जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांनी प्रभावी नियोजन व अंमलबजावणी करावी.

**८ आऊटसोर्सिंगद्वारे सेवा उपलब्धता —**

मनुष्यबळाच्या सेवा पुरविणा-या खाजगी ठेकेदारांकडून पुरवठा करावयाच्या कर्मचा-यांची संख्या खालीलप्रमाणे आहे.

| अ.क्र | फळपिक            | जिल्हा     | किड सर्वेक्षक | संगणक प्रचालक | पेस्ट मॉनिटर (कृषि पर्यवेक्षक) |
|-------|------------------|------------|---------------|---------------|--------------------------------|
| १     | आंबा             | ठाणे       | ३             | १             | १                              |
| २     |                  | रायगड      | ८             | १             | १                              |
| ३     |                  | रत्नागिरी  | २८            | ३             | ३                              |
| ४     |                  | सिंधुदुर्ग | ९             | १             | १                              |
| ५     |                  | बीड        | ३             | २             | २                              |
| ६     |                  | उस्मानाबाद | १             | १             | १                              |
| ७     |                  | औरंगाबाद   | २             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>५४</b>     | <b>१०</b>     | <b>१०</b>                      |
| ८     | डाळींब           | नाशिक      | ९             | १             | १                              |
| ९     |                  | सांगली     | २             | १             | १                              |
| १०    |                  | सोलापूर    | १४            | २             | २                              |
| ११    |                  | अहमदनगर    | २             | १             | १                              |
| १२    |                  | सातारा     | १             | १             | १                              |
| १३    |                  | औरंगाबाद   | ४             | २             | २                              |
| १४    |                  | बीड        | १             | १             | १                              |
| १५    |                  | धुळे       | १             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>३४</b>     | <b>१०</b>     | <b>१०</b>                      |
| १६    | केळी             | जळगाव      | १९            | २             | २                              |
| १७    |                  | नांदेड     | ४             | १             | १                              |
| १८    |                  | सोलापूर    | २             | २             | २                              |
| १९    |                  | हिंगोली    | २             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>२७</b>     | <b>६</b>      | <b>६</b>                       |
| २०    | संत्रा           | अमरावती    | ३१            | ५             | ५                              |
| २१    |                  | बुलढाणा    | १             | १             | १                              |
| २२    |                  | वर्धा      | २             | १             | १                              |
| २३    |                  | नागपूर     | ८             | २             | २                              |
| २४    |                  | अकोला      | १             | १             | १                              |
| २५    |                  | वाशिम      | ४             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>४७</b>     | <b>११</b>     | <b>११</b>                      |
| २६    | मोसंबी           | औरंगाबाद   | १४            | ३             | ३                              |
| २७    |                  | बीड        | १             | १             | १                              |
| २८    |                  | जालना      | ११            | २             | २                              |
| २९    |                  | नांदेड     | ८             | ३             | ३                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>३४</b>     | <b>९</b>      | <b>९</b>                       |
| ३०    | चिकू             | ठाणे       | ४             | १             | १                              |
|       | <b>एकूण</b>      |            | <b>४</b>      | <b>१</b>      | <b>१</b>                       |
|       | <b>एकूण सर्व</b> |            | <b>२००</b>    | <b>४७</b>     | <b>४७</b>                      |

सदर कर्मचा-यांची अर्हता, कर्तव्ये व जबाबदा-या खालीलप्रमाणे राहतील.



**८.२ कीड सर्वेक्षक (पेस्ट स्काऊट) :** आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांसाठी प्रति ५०० ते २००० हेक्टर साठी १ कीड सर्वेक्षक प्रस्तावित करण्यात आले असून त्यांना दरमहा रु.४२००/- इतके मूळ मासिक वेतन, प्रवास भत्ता तसेच इतर सेवा कर व सेवा आकारासह रु.९५००/- (मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार ठेकेदाराच्या सेवा आकारासह) वेतन प्रस्तावीत आहे.

**शैक्षणिक अर्हता:** १. उमेदवार कृषि पदविकाधारक असावा.

२. स्थानिक तालुक्यात व उपविभागात राहणा-या उमेदवारास प्राधान्य द्यावे.

३. वय २१ ते ४५ वर्षे

**सेवा कालावधी —** १. आंबा ०१ नोव्हेंबर २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ५४ कीड सर्वेक्षक (सात महिने) )

२. डाळींब - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ३४ कीड सर्वेक्षक (अकरा महिने) )

३. केळी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण २७ कीड सर्वेक्षक (अकरा महिने) )

४. संत्रा - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ४७ कीड सर्वेक्षक (अकरा महिने) )

५. मोसंबी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ३४ कीड सर्वेक्षक (अकरा महिने) )

६. चिकू - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ४ कीड सर्वेक्षक (अकरा महिने) )

**८.२.१ कर्तव्य व जबाबदा-या -**

१. कीड सर्वेक्षकांसाठी गाव व क्षेत्र निवडीसाठी देण्यात आलेल्या मार्गदर्शक सुचनांप्रमाणे पुर्व निश्चित क्षेत्रात कीड सर्वेक्षक आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकांकरीता कीड सर्वेक्षण करतील.
२. कीड सर्वेक्षक कृषि पर्यवेक्षकाच्या अधिनस्त काम करतील.
३. कीड सर्वेक्षक निश्चित केलेल्या शेताकरीता प्लॉट (४) कीड व रोगांची निरीक्षणे घेतील आणि प्रत्येक गावातील रॅण्डम पध्दतीने ४ बागा ठरवून दिलेले क्षेत्र किंवा एकाच गावातील ४ पेक्षा जास्त बागा (पिकाच्या लागवडीखालील क्षेत्रावर अवलंबून) याकरीता सुध्दा कीड व रोगांची निरीक्षणे घेतील अशाप्रकारे एकूण एकाच गावातील ४ शेतांतील कीड व रोगांची निरीक्षणे कीड सर्वेक्षक (प्रशिक्षण कार्यक्रमाच्या वेळी दिलेल्या मार्गदर्शक सुचनांनुसार) घेतील. अशाप्रकारे २ गावांकरीता कीड सर्वेक्षक दर सोमवार, मंगळवार, गुरुवार आणि शुक्रवार या चार दिवशी कीड रोगांचे सर्वेक्षण करण्याकरीता निरीक्षण घेतील.
४. कीड सर्वेक्षक कीड सर्वेक्षण अहवाल कीड नियंत्रकांकडे आठवडयातून दोनदा म्हणजेच दर बुधवारी आणि शनिवारी सादर करतील.
५. कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक हे कृषि विद्यापीठ व कृषि विभाग यांचेकडून आयोजित केलेल्या प्रशिक्षणात दिलेल्या तांत्रिक निकषांनुसार कीड रोग सर्वेक्षणाचे काम करतील.
६. कीड सर्वेक्षक हे ग्रामीण भागातच राहून पिकांवरील कीड व रोगाकरीताची निरीक्षणे घेतील.
७. कीड सर्वेक्षक यांनी त्यांच्यासाठी आयोजित केलेल्या विविध प्रशिक्षण कार्यक्रमांमधून कीड रोग सर्वेक्षणासंबंधीची माहिती घेतली पाहिजे.

८. कृषि पर्यवेक्षकांच्या मार्गदर्शनानुसार सर्वेक्षणाकरीता निवडलेल्या शेतात सापळे बसविणे तसेच वेळोवेळी सापळ्यातील लूर बदलणे ही कीड सर्वेक्षकाची जबाबदारी राहिल.
९. शेतामधील निरीक्षणे वेळीच घेण्यासाठी कीड सर्वेक्षकाजवळ प्रवासाची साधने व प्रवासाबद्दलची माहिती याचे चांगले ज्ञान असणे आवश्यक असून प्रवासाची आवड असावी.
१०. कीड सर्वेक्षकाने शेतकरी, कृषि विभाग आणि इतर अधिकारी यांचेशी सतत संपर्कात रहावे.
११. मार्गदर्शक सुचनांप्रमाणे कीड सर्वेक्षकाने नेमून दिलेल्या क्षेत्राकरीता धावते सर्वेक्षण (रोव्हिंग सर्व्हे) करावयाचे आहे.

**८.३ संगणक प्रचालक (डेटा एन्ट्री ऑपरेटर) :** कीड रोग सर्वेक्षण अहवालांची ऑनलाईन नोंद करण्यासाठी प्रति कृषि पर्यवेक्षकाकरीता एक संगणक प्रचालक प्रस्तावित करण्यात आला असून त्यांना दरमहा रु. ४२००/- इतके मूळ मासिक वेतन तसेच इतर सेवा कर व सेवा आकारासह रु. ७०००/- (मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार संस्थेच्या सेवा आकारासह) मानधन प्रस्तावीत आहे.

**शैक्षणिक अर्हता:** १. उमेदवार १२ वी पास व महाराष्ट्र ज्ञानमंडळाचा एम. एस. सी. आय. टी. संगणक प्रमाणपत्र धारक असावा तसेच तो टंकलेखनाची परीक्षा उत्तीर्ण असावा.  
२. स्थानिक तालुक्यात, उपविभागात राहणा-या उमेदवारास प्राधान्य द्यावे.  
३. वय २१ ते ४५ वर्षे

**सेवा कालावधी -**

१. आंबा ०१ नोव्हेंबर २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण १० संगणक चालक (सात महिने) )
२. डाळींब - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण १० संगणक चालक (अकरा महिने) )
३. केळी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण ६ संगणक चालक (अकरा महिने) )
४. संत्रा - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण ११ संगणक चालक (अकरा महिने) )
५. मोसंबी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण ९ संगणक चालक (अकरा महिने) )
६. चिकू - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५  
( एकूण १ संगणक चालक (अकरा महिने) )

**कर्तव्य व जबाबदा-या -**

१. संगणकावर ऑनलाईन डाटा नियमितपणे भरण्याची मुख्य जबाबदारी संगणक प्रचालकाची आहे.
२. उपविभागीय कृषि अधिकारी व कृषि पर्यवेक्षक यांच्या संपूर्ण नियंत्रण व मार्गदर्शनाखाली संगणक प्रचालक काम करतील.
३. कार्यालयीन अभिलेखांचे वर्गिकरण व देखभाल करणे तसेच कीड सर्वेक्षणांतर्गत कीड सर्वेक्षकांनी दिलेली कीड रोग सर्वेक्षणाबद्दलची माहिती ऑनलाईन भरणे आणि एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली यांनी त्यांच्या संकेत स्थळावर (वेब साईट) पुरविलेल्या माहितीचे संकलन उपविभागीय कृषि अधिकारी व कृषि पर्यवेक्षक यांच्या मार्गदर्शनाखाली करण्याची संपूर्ण जबाबदारी संगणक प्रचालक यांची राहिल.
४. कृषि पर्यवेक्षक यांच्या मार्गदर्शनाखाली कृषि विद्यापीठांना एसएमएस, वेब मेसेजेस, ई-मेल पाठविणे आणि त्यांचेकडून पिकसंरक्षण सल्ला मिळालेनंतर त्याचे संबंधित शेतक-यांना, अधिका-यांना व क्षेत्रिय पातळीवरील कर्मचा-यांना संगणकाधारीत संपर्क साधनांद्वारे अग्रेषित करण्याची जबाबदारी संगणक प्रचालकाची राहिल.

५. संगणक प्रचालकाने त्याला नेमून दिलेल्या विषय/कामासंबंधी सर्व पत्रव्यवहारांच्या प्रतिक्रिया टंकलिखित करून पाठविण्याची जबाबदारी पार पाडावी.
६. संगणक/लॅपटॉप व इतर अनुषंगिक साहित्याची योग्य काळजी घेण्याची जबाबदारी संगणक प्रचालकाची राहिल.
७. कीड सर्वेक्षक हे कृषि पर्यवेक्षक व उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचे संगणक/लॅपटॉप व इतर अनुषंगिक साहित्य यांची दुरुस्ती व देखभाल यासंबंधी त्यांना सुचित करून आवश्यक ते मार्गदर्शन घेतील.

**८.४ कृषि पर्यवेक्षक (पेस्ट मॉनिटर) :** प्रति १० कीड सर्वेक्षकांच्या सनियंत्रणसाठी एक कृषि पर्यवेक्षक प्रस्तावित करण्यात आला आहे. कीड सर्वेक्षण कामाच्या आवश्यक फिरतीकरीता वाहन उपलब्ध करून देण्यासाठी रू. २०,०००/- रक्कम दरमहा प्रमाणे संबंधीत उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडे तरतूद करून देण्यात आली आहे. विभागीय कृषि सहसंचालक यांनी यासाठी त्यांचे विभागातून योग्य कृषि पर्यवेक्षकांची नावे निश्चीत करून उपलब्ध करून घ्यावेत.

**शैक्षणिक अर्हता:** १. कृषि पर्यवेक्षक कृषि पदवीधर असावा. पदव्युत्तर पदवीधारकांस प्राधान्य देण्यात यावे.

२. कृषि पर्यवेक्षक शक्यतो टि.ओ. एफ. प्रशिक्षित असावा.

३. स्थानिक तालुक्यात, उपविभागात राहणा-या कृषि पर्यवेक्षकांस प्राधान्य द्यावे.

४. वय २१ ते ४५ वर्षे

**सेवा कालावधी-**

१. आंबा ० १ नोव्हेंबर २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण १० कृषि पर्यवेक्षक (सात महिने) )

२. डाळींब - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण १० कृषि पर्यवेक्षक (अकरा महिने) )

३. केळी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ६ कृषि पर्यवेक्षक (अकरा महिने) )

४. संत्रा - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ११ कृषि पर्यवेक्षक (अकरा महिने) )

५. मोसंबी - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण ९ कृषि पर्यवेक्षक (अकरा महिने) )

६. चिकू - १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

( एकूण १ कृषि पर्यवेक्षक (अकरा महिने) )

**कर्तव्य व जबाबदा-या -**

१. उपविभागीय कृषि अधिकारी व कीड सर्वेक्षकांमध्ये कीड-रोग सर्वेक्षणाबाबत कृषि पर्यवेक्षक समन्वय साधेल.
२. ऑनलाईन प्रपत्रे पाठविणे, सर्वेक्षणाचे कार्य व्यवस्थित पार पाडणे व त्यामध्ये समन्वय ठेवण्याची संपूर्ण जबाबदारी कृषि पर्यवेक्षकांची राहिल.
३. कृषि पर्यवेक्षक हे संपुर्णतः उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचे अधिनस्त व नियंत्रणात काम करतील
४. कृषि पर्यवेक्षक त्यांच्या कार्यक्षेत्रातील कीड सर्वेक्षकांकडून सर्वेक्षण प्रपत्रे संकलीत करणे व त्याबाबत उपविभागीय कृषि अधिकारी यांना अवगत करतील.

५. संगणक प्रचालकाचे मदतीने ऑनलाईन प्रपत्रे पाठविण्याची संपूर्ण जबाबदारी कृषि पर्यवेक्षकाची राहिल.
६. कृषि पर्यवेक्षक कृषि विद्यापीठ जिल्हा प्रतिनिधी, कीड सर्वेक्षक व शेतकरी यांचेशी कीड सर्वेक्षण कार्यक्रमाच्या परिणामकारक नियोजनाबाबत संपर्क ठेवतील.
७. कीड सर्वेक्षण कार्यक्रम तसेच उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचे मार्गदर्शनाखाली एकात्मिक कीड व्यवस्थापन कार्यक्रम राबविण्याबाबतचे संनियंत्रण करतील. एकात्मिक कीड व्यवस्थापनाचा कार्यक्रम समाधानकारकपणे राबविला जात नसल्यास उपविभागीय कृषि अधिकारी संबंधित जिल्हा अधीक्षक कृषि अधिकारी व कृषि विद्यापीठ यांचे निदर्शनास आणतील व त्यामध्ये सुधारणा प्रस्तावीत करतील.
८. कृषि पर्यवेक्षक काही शेतक-यांच्या जनजागरण कार्यक्रमास उपस्थित राहतील व प्रगतशील शेतक-यांना, कीड सर्वेक्षकांना तसेच क्षेत्रीय कर्मचा-यांना कीडरोग सर्वेक्षणाबाबत मार्गदर्शन करतील.
९. ज्या तालुक्यात कीड रोग प्रादुर्भाव जास्त आहे किंवा आर्थिक नुकसान पातळीपर्यंत पोहचला आहे अशा कमीत कमी एका तालुक्यास कृषि पर्यवेक्षक प्रत्येक आठवड्यास भेट देतील व त्याबाबतचा अहवाल उपविभागीय कृषि अधिकारी यांना देतील व त्यामध्ये राबविल्या जात असलेल्या एकात्मिक कीड व्यवस्थापनाबाबतची स्थिती, गुणवत्ता, येणा-या अडचणी व त्यावरील उपाय सुचवतील.
१०. जिल्हा नोडल अधिकारी, कृषि विद्यापीठ व कृषि विज्ञान केंद्र प्रतिनिधी यांच्याशी संपर्कात राहून कीड रोग सर्वेक्षण कार्यक्रम परीणामकारक होत असलेबाबत खात्री करतील.
११. विद्यापीठाकडून सुचविलेला ऑनलाईन एस.एम.एस सल्ला संगणक प्रचालकांच्या मदतीने संकेतस्थळावरून काढणे व संबंधित तालुक्यातील नोंदणी झालेल्या मोबाईलधारक शेतक-यांना पाठविण्यासाठी उपविभागीय कृषि अधिकारी यांना मदत करतील.
१२. कीड सर्वेक्षक व संगणक प्रचालक यांच्या कामाबाबतचा अहवाल व उपस्थिती याबाबतची माहिती संबंधित उपविभागीय कृषि अधिकारी यांना सादर करणे.

वरील जबाबदा-या व्यतिरिक्त कृषि पर्यवेक्षक यांनी उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडून सर्वेक्षण व एकात्मिक कीड व्यवस्थापनासंबंधीत देण्यात आलेले कार्य पार पाडावे तसेच **कृषि पर्यवेक्षकांसाठी गाव व क्षेत्र निवडीसाठी देण्यात आलेल्या मार्गदर्शक सूचनांनुसार कार्य पार पाडावे.**

- ८.५ संगणक प्रणाली मदतनीस (सॉफ्टवेअर सपोर्टर):** कृषि पर्यवेक्षकांस लॅपटॉप संबंधी येणा-या अडचणींची सोडवणूक करणेकरिता विभागीय कृषि सहसंचालक, ठाणे, पुणे, नाशिक, कोल्हापूर, औरंगाबाद, लातूर, अमरावती, नागपूर प्रत्येकी १ याप्रमाणे ८ संगणक प्रणाली मदतनीस उपलब्ध असून त्याचा वापर करण्यात यावा. त्यांना दरमहा रु. ७२००/- इतके मूळ मासिक वेतन तसेच इतर सेवा कर व सेवा आकारासह रु. १४०००/- (मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार ठेकेदाराच्या सेवा आकारासह) वेतन प्रस्तावीत आहे.

- शैक्षणिक अर्हता:**
१. उमेदवार संगणक शास्त्र/संगणक ॲप्लिकेशन्स मधील पदव्युत्तर पदवी धारक असावा
  २. मायक्रोसॉफ्ट मधील नेट तंत्रज्ञान अवगत असावे
  ३. वय २१ ते ४५ वर्षे
- सेवा कालावधी -** १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५ (अकरा महिने)

**८.५.१ कर्तव्य व जबाबदा-या -**

१. कृषि पर्यवेक्षकांकडील लॅपटॉपमधील कीड रोग सर्वेक्षण सॉफ्टवेअर मधील अडचणी सोडविणे व नियमित ऑनलाईन प्रपत्रे भरण्यासाठीचे कार्य सुरळीत पार पाडण्यासाठी मदत करणे.
२. ऑनलाईन प्रपत्रे भरण्यामध्ये काही अडचणी आल्यास त्या सोडवण्यासाठी संगणक प्रचालकाला फोनद्वारे सूचना देणे अथवा इंटरनेटद्वारे संपर्क साधून सदर लॅपटॉपमधील अडचणी सोडविणे.
३. वरीलप्रमाणे अडचणीचे निराकरण न झाल्यास संबंधित संगणक प्रचालकास लॅपटॉपसह विभागीय कृषि सहसंचालक कार्यालयात बोलविणे व सदर अडचणीची तपासणी करणे. (सॉफ्टवेअर अथवा हार्डवेअर)
४. जर हार्डवेअरबाबत अडचण असल्यास जवळच्या एचसीएल डीलर यांचेशी संपर्क साधून ती अडचण सोडविणे (यासाठी विभाग स्तरावरून एचसीएल डीलर्सचे फोन नं. प्राप्त करून घ्यावेत.) एचसीएल डीलरकडे लॅपटॉप हस्तांतरित करतांना संगणक प्रचालकाकडून याबाबतची पोहोच घेणे.
५. लॅपटॉपच्या दुरुस्तीनंतर त्याची तपासणी करणे व सर्वेक्षणाबाबत ऑनलाईन प्रपत्रे भरण्याकरीताचे आवश्यक सॉफ्टवेअरचा त्यामध्ये अंतर्भाव करणे.
६. सॉफ्टवेअर संबंधित अडचण असल्यास त्याने दुरुस्ती करणे अथवा सॉफ्टवेअरचे बाबतीत एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली यांनी दिलेल्या प्रशिक्षणानुसार सदर सॉफ्टवेअर पुन्हा लॅपटॉपमध्ये स्थापित करणे व निराकरण न झाल्यास मदतीसाठी एनसीआयपीएम नवी दिल्ली यांच्या अधिका-यांशी संपर्क साधणे.
७. लॅपटॉपमधील ऑफिस सॉफ्टवेअर नादुरुस्त झाल्यास अथवा ऑनलाईन संगणक प्रणालीत बिघाड झाल्यास लॅपटॉप बरोबर दिलेल्या मूळ सीडीद्वारे दुरुस्ती करणे.

**८.६ संगणक ऑपरेटर:-** प्रकल्पांतर्गत ऑनलाईन भरलेल्या अहवालांची संकेतस्थळावरून माहिती घेणे, विहित प्रपत्रात माहितीचे संकलन करणे, विविध बैठकींसाठी आवश्यक माहिती तयार करणे यासाठी राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी तीन संगणक ऑपरेटर मंजूर त्यांना दरमहा रु. ४८००/- इतके मूळ मासिक वेतन तसेच इतर सेवा कर व सेवा आकारासह रु. ८०००/- (मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार ठेकेदाराच्या सेवा आकारासह) वेतन प्रस्तावीत आहे.

**शैक्षणिक अर्हता:** १. उमेदवार कोणत्याही शाखेचा पदवीधर असावा.

२. संगणकामधील एक वर्षाचा प्रमाणपत्र /पदविका अभ्यासक्रम पूर्ण केलेला असावा तसेच तो मराठी व इंग्रजी टंकलेखनाची परीक्षा उत्तीर्ण असावा.

३. वय २१ ते ४५ वर्षे

**सेवा कालावधी** — १ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५

**८.६.१ कर्तव्य व जबाबदा-या :-**

१. संगणक ऑपरेटर हे कृषि उपसंचालक (फलो-२) यांचे अधिनस्त क्रॉपसॅपचे काम करतील.
२. ऑनलाईन भरलेल्या अहवालांची संकेतस्थळावरून माहिती घेणे व ज्या ठिकाणी अहवालांची संख्या ८० टक्केपेक्षा कमी असेल ती ठिकाणे कृषि उपसंचालक (फलो-२) यांचे निदर्शनास आणणे.
३. कृषि उपसंचालक (फलो-२) यांच्या मार्गदर्शनाखाली व संशोधन सहयोगी यांच्या मदतीने एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली यांनी त्यांच्या संकेत स्थळावर (वेब साईट) प्रकल्प संबंधीत पुरविलेल्या

माहितीचे विहित प्रपत्रात संकलन तयार ठेवणे तसेच अभिलेखांचे वर्गिकरण, व्यवस्थापन व जतन करण्याची जबाबदारी संगणक ऑपरेटर यांची असेल.

४. प्रकल्पांतर्गत उपविभागीय कृषि अधिकारी यांनी पाठविलेल्या एसएमएसच्या अहवालांची माहिती अद्ययावत ठेवणे, कृषि उपसंचालक (फलो-२) यांच्या मार्गदर्शनाखली व संशोधन सहयोगी यांच्या मदतीने क्षेत्रीय पातळीवर व सहभागी संस्थाना एसएमएस, ई-मेल व इतर माध्यमांद्वारे माहिती पाठविणे तसेच सहभागी संस्थांकडून आलेले पीक संरक्षण सल्ले क्षेत्रीय पातळीवर तसेच संबंधितांना संगणकाधारीत संपर्क साधनांद्वारे अग्रेषित करण्याची जबाबदारी संगणक ऑपरेटर यांची असेल.
५. प्रकल्प संबंधीत सर्व पत्रव्यवहार व अहवालांचे टंकलेखन करणे.
६. संगणक/लॅपटॉप व इतर अनुषंगिक साहित्याची योग्य काळजी घेणे, यासंबंधीत अनुषंगिक साहित्यांची दुरुस्ती व देखभालीबाबत कृषि उपसंचालक (फलो-२) व संशोधन सहयोगी यांना सुचित करून आवश्यक ते मार्गदर्शन घेऊन पाठपुरावा करणे.
७. विविध बैठकींसाठी आवश्यक माहिती संकलन व पॉवर पॉईंटमध्ये सादरीकरण तयार करणे.

**८.७ राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी लेखापाल:** प्रकल्पांतर्गत सहभागी संस्थांना अनुदान वाटप करणे, त्याचा विहित प्रपत्रात हिशेब ठेवणे, मासिक प्रगती अहवाल अद्ययावत ठेवणे, विविध बैठकींसाठी आवश्यक माहिती तयार करणे यासाठी राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी एक लेखापाल प्रस्तावित करण्यात येत आहे. राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी एक लेखापाल दरमहा एकूण रू. १५०००/- (मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार ठेकेदाराच्या सेवा आकारासह) वेतन प्रस्तावीत आहे.

**शैक्षणिक अर्हता:** १. उमेदवार कोणत्याही शाखेचा पदवीधर असावा. तथापि, वाणिज्य शाखेच्या पदवीधरास प्रधान्य देण्यात यावे.

२. उमेदवार महाराष्ट्र ज्ञानमंडळाचा एम.एस.सी.आय.टी. संगणक प्रमाणपत्र धारक असावा. तसेच तो मराठी व इंग्रजी टंकलेखनाची परीक्षा उत्तीर्ण असावा.

३. वय २१ ते ४५ वर्षे

**सेवा कालावधी -** ०१ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५ (अकरा महिने)

**८.७.१ कर्तव्य व जबाबदा-या :-**

१. लेखापाल हे कृषि उपसंचालक (फलो-२) यांचे अधिनस्त काम करतील.
२. प्रकल्पांतर्गत सहभागी संस्थांना अनुदान वाटप करणे, त्याचा विहित प्रपत्रात हिशेब ठेवणे, त्याचबरोबर मासिक प्रगती अहवाल अद्ययावत ठेवण्याची जबाबदारी लेखापाल यांची असेल.
३. अनुदान वाटपाबाबत लेखा शाखेकडे पाठपुरावा करणे.
४. सहभागी संस्था तसेच क्षेत्रीय पातळीवरील अनुदान संबंधीत पत्रव्यवहार करणे.
५. प्रकल्पाचे उपयोगिता प्रमाणपत्र तयार करणे.
६. विविध बैठकींसाठी आवश्यक माहिती तयार करणे.
७. अनुदान संबंधीत कार्यालयीन अभिलेखांचे देखभाल व जतन करणे.

९. आऊटसोर्सिंगद्वारे उपलब्ध करून घेतलेल्या मनुष्यबळाच्या सेवांचे नियमन व वेतन वितरण कार्यपध्दती :-

फलोत्पादन विभागामार्फत राबविण्यात येणा-या किड रोग सर्वेक्षण, सल्ला व व्यवस्थापन प्रकल्पामध्ये आऊटसोर्सिंगद्वारे उपलब्ध करून घ्यावयाच्या मनुष्यबळाच्या सेवांचे नियमन व वेतन वितरण कार्यपध्दती ही कृषि विभागामार्फत राबविण्यात येत असलेल्या क्रॉपसॅप योजनेच्या मार्गदर्शक सूचनेप्रमाणेच राहिल. आऊटसोर्सिंगद्वारे नियुक्त करावयाच्या किड सर्वेक्षक, संगणक प्रचालक, संगणक प्रणाली मदतनीस, लेखापाल या कंत्राटी कर्मचा-यांची नियुक्ती महाराष्ट्र उद्योजकता विकास मंडळ, पुणे यांचेमार्फत करावयाची आहे.

- ९.१ कीड सर्वेक्षक, संगणक प्रचालक, संगणक प्रणाली मदतनीस, संशोधन सहयोगी, संगणक ऑपरेटर व लेखापाल या पदांसाठी मनुष्यबळ प्राप्त करून घेण्यासाठी निविदा प्रक्रिया पार पाडणे व योग्यतेबाबत पुढीलप्रमाणे कार्यवाही करण्यात यावी.

| अ. क्र. | पदाचे नांव                                   | मनुष्यबळ उपलब्धता प्रक्रिया राबविणे     | संबंधित पदासाठी उमेदवारांची योग्यता ठरविणारे अधिकारी/ संस्था | कामाचे ठिकाण निश्चित करणे               |
|---------|--|---|--|---|
| १       | कीड सर्वेक्षक                                | वि.कृ.सहसंचालक                          | वि.कृ.सहसंचालक   | वि.कृ.सहसंचालक                          |
| २       | संगणक प्रचालक                                | वि.कृ.सहसंचालक                          | वि.कृ.सहसंचालक   | वि.कृ.सहसंचालक                          |
| ३       | संगणक प्रणाली मदतनीस                         | वि.कृ.सहसंचालक                          | वि.कृ.सहसंचालक   | वि.कृ.सहसंचालक                          |
| ४       | राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी संगणक ऑपरेटर | वि.कृ.सहसंचालक पुणे                     | वि.कृ.सहसंचालक पुणे  | संचालक, फलोत्पादन, कृषि आयुक्तालय, पुणे |
| ५       | राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्षासाठी लेखापाल      | वि.कृ.सहसंचालक पुणे                     | वि.कृ.सहसंचालक पुणे  | संचालक, फलोत्पादन, कृषि आयुक्तालय, पुणे |
| ६       | संशोधन सहयोगी (राज्यस्तरीय सनियंत्रण कक्ष)   | चारही कृषि विद्यापीठे                   | चारही कृषि विद्यापीठे  | संचालक, फलोत्पादन, कृषि आयुक्तालय, पुणे |
| ७       | संशोधन सहयोगी (संस्था / कृषि विद्यापीठ स्तर) | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ                      | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ |
| ८       | संगणक ऑपरेटर (संस्था / कृषि विद्यापीठ स्तर)  | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ                      | संबंधित संस्था / संबंधित कृषि विद्यापीठ |

- ९.२ सर्वेक्षण चमूचे पर्यवेक्षण व सनियंत्रण:- प्रकल्पांतर्गत नियुक्त कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांकडून योग्य प्रकारे सर्वेक्षण होण्यासाठी त्यांचेवर देखरेख ठेवणे जरूरी आहे. याकरीता प्रत्येक उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडून त्यांच्या कार्यक्षेत्रात कार्यरत असलेले कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयी हजर असलेबाबत खात्री करावी तसेच कीड रोग सर्वेक्षणाचे काम तांत्रिक दृष्ट्या योग्य प्रकारे होत असल्याबाबतची तपासणी करण्यात यावी. सदर तपासणी ज्या दिवशी कीड सर्वेक्षक/कृषि पर्यवेक्षकाने निरीक्षणे घेतली आहेत त्याच दिवशी करण्यात यावी व याबाबतचा अहवाल पुढील प्रपत्रात दर आठ दिवसांनी जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी व फलोत्पादन विभाग, कृषि आयुक्तालय, यांना

hortplanning@rediffmail.com या ई-मेलवर सादर करावा. जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांनी त्यांच्या दौ-यामध्ये निरिक्षणाच्या नोंदीची जाणीवपूर्वक तपासणी करावी तसेच अधिनस्त उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडील तपासणी अहवालाबाबत वेळोवेळी आढावा घ्यावा. कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयी हजर नसल्यास तसेच त्यांनी घेतलेले निष्कर्ष व तपासणीमध्ये तफावत दिसून आल्यास त्याबाबत सविस्तर अभिप्राय विभागीय कृषि सहसंचालक यांना सादर करावा. कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक त्यांना नेमून दिलेल्या कर्तव्य व जबाबदारीमध्ये वारंवार कसूर करत असल्यास जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी संबंधीत ठेकेदाराकडून तात्काळ कीड सर्वेक्षक बदलून घेतील तर कृषि पर्यवेक्षकांचे बाबत कामामध्ये कसूर केल्याबाबत आवश्यक ती प्रशासकीय कार्यवाही करावी.

उपविभागाचे नाव :

कालावधी : / /२०१ ते / /२०१

| अ.क्र | तपशील  | कीड सर्वेक्षक | कृषि पर्यवेक्षक |
|-------|--|---------------|-----------------|
| १     | आठवडा निहाय सर्वेक्षण केलेल्या रॅन्डम व फिक्स प्लॉटची संख्या               |               |                 |
| २     | उपविभागीय कृषि अधिकारी यांनी तपासणी केलेल्या रॅन्डम व फिक्स प्लॉटची संख्या |               |                 |
| ३     | तपासणी निष्कर्ष  |               |                 |

९.३ कृषि विज्ञान केंद्र (केव्हीके) यांचेमार्फतही प्रकल्पांतर्गत नियुक्त कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांच्या कामावर देखरेख ठेवण्यात यावी. यासाठी प्रत्येक जिल्ह्यासाठी एका कृषि विज्ञान केंद्राची नियुक्ति करण्यात यावी. देखरेख ठेवण्यासाठी केलेल्या फिरस्तीसाठी त्यांना इंधन व आकस्मिक खर्च देण्यात येईल. सदर कृषि विज्ञान केंद्रांनी प्रत्येक आठवडयातील एका दिवसात जिल्ह्यातील कार्यरत कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयी हजर असलेबाबत खात्री करावी, त्यांचेकडून कीड रोग सर्वेक्षणाचे काम तांत्रिक दृष्ट्या योग्य प्रकारे होत असल्याबाबतची तपासणी करावी. कीड रोग सर्वेक्षणाबाबत कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांना मार्गदर्शन करावे व याबाबत विहित प्रपत्रातील अहवाल जिल्हा मुख्यालयस्थित उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडे सुपुर्त करावा. उपविभागीय कृषि अधिकारी यांनी सदर अहवाल एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली यांनी तयार केलेल्या संगणक प्रणालीवर नोंदवावा तसेच सदर अहवाल जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांचे निदर्शनास आणावा. कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षक त्यांना नेमून दिलेल्या कर्तव्य व जबाबदारीमध्ये वारंवार कसूर करत असल्यास जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी संबंधीत ठेकेदाराकडून कीड सर्वेक्षक बदलून घेतील तर कृषि पर्यवेक्षकांचे बाबत कामामध्ये कसूर केल्याबाबत आवश्यक ती प्रशासकीय कार्यवाही करतील.

९.४ सर्वेक्षण कालावधीनिहाय नेमणूकीतील फेरबदल व सेवा समाप्ती:-

९.६.१ डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांकरीता नियुक्त करण्यात आलेल्या कीड सर्वेक्षक, कृषि पर्यवेक्षक व संगणक प्रचालक यांचेकडून १५ जुलै २०१४ ते ३१ मे २०१५ पर्यंत व आंबा या पिकांकरीता १५ नोव्हेंबर २०१४ ते ३१ मे २०१५ पर्यंत सर्वेक्षण करण्यात यावे. या पिकांसाठी नियुक्त



केलेल्या सर्वेक्षण चमूकडील सर्वेक्षण साहित्य दिनांक ३१ मे २०१५ पर्यंत उपविभागस्तरावर जमा करुन सर्वेक्षण चमूस कार्यमुक्त करण्यात यावे.

- १.६.२ सर्वेक्षणासाठी नियुक्त केलेल्या कृषि पर्यवेक्षकांकडून आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिकांकरीता कीड रोग पुर्व इतिहास पुस्तिका दिनांक ३१ मे २०१५ पर्यंत तयार करुन दहा दिवसाचे आत उपविभागीय कृषि अधिकारी यांनी कृषि आयुक्तालयास सादर करावी.
- १.६.३ ज्याठिकाणी आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू अंतर्गत कार्यरत असलेल्या कीड सर्वेक्षक, संगणक प्रचालक व कृषि पर्यवेक्षकांच्या व्यतिरीक्त अतिरीक्त कर्मचा-यांची आवश्यकता असेल त्याठिकाणी विभागीय कृषि सहसंचालक आवश्यक असणा-या कर्मचा-यांच्या उपलब्धतेबाबत नियोजन करावे व नियोजित वेळी सदर कर्मचारी हजर होतील असे पहावे. नवीन नियुक्त होणा-या कर्मचा-यांस आवश्यकतेप्रमाणे सर्वेक्षणाच्या दिनांकापुर्वी १५ दिवस आधी प्रशिक्षित करण्यात यावे.

#### १० कीड नियंत्रण चमूसाठी कीड सर्वेक्षण साहित्याची उपलब्धता :-

- १०.१ विभागीय कृषि सहसंचालक यांनी सर्वेक्षण साहित्याचा आढावा घेऊन सन २०१४-१५ मध्ये राबवावयाच्या पिकांवरील कीड रोग सर्वेक्षण व सल्ला प्रकल्पातील कीड सर्वेक्षक, कृषि पर्यवेक्षक व संगणक प्रचालक यांना आवश्यकतेनुसार सदर प्रकल्पाच्या आकस्मिक निधीतून उपलब्ध करुन देण्याचे नियोजन करावे.
- १०.२ आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या प्रकल्पांतर्गत कीड सर्वेक्षक, कृषि पर्यवेक्षक व संगणक प्रचालक यांच्या सर्वेक्षण साहित्यामध्ये सर्वेक्षण किट, लॅपटॉप, पेनड्राईव्ह इत्यादि बाबींचा समावेश असेल.

#### ११ आपत्कालीन परिस्थितीत आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांवरील कीड रोगांच्या व्यवस्थापनासाठी पीक संरक्षण घटकांची उपलब्धता:-

आपत्कालीन परिस्थितीत एकात्मिक कीड व्यवस्थापनासाठी वापरावयाच्या निवीष्टांकरीता ऑनलाईन संगणक प्रणालीद्वारे उपलब्ध होणा-या शिफारसीच्या आधारे व कृषि विद्यापीठांकडील जिल्हा समन्वयक व जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांनी शिफारस केल्यानुसार एकात्मिक कीड व्यवस्थापनाच्या जैविक/रासायनिक बाबी/घटक गरजेनुरूप निर्धारित करण्यात यावेत. त्यानुसार आवश्यक तो पुरवठा ५० टक्के अनुदान व जास्तीत जास्त रु. १०००/- प्रति हेक्टर मर्यादेत शेतक-यांना करण्यात यावा. आपत्कालीन परिस्थितीत कीड रोग नियंत्रणासाठीच्या निवीष्टांची खरेदी, पुरवठा व नियंत्रण संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालक यांनी करावा. सदरचा पुरवठा आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांकरीता स्थानिक गरज व कीड रोगाची तीव्रता विचारात घेऊन आवश्यक असलेल्या ठिकाणी करण्यात यावा. या योजनेअंतर्गत उपलब्ध करुन दिलेल्या अर्थसहाय्याचा वापर करुन आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू या पिकांवर येणा-या सर्व प्रकारच्या कीड व रोगांच्या व्यवस्थापनासाठी करण्यात यावा.

आपत्कालीन परिस्थितीमध्ये आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या वरील कीड-रोग प्रादुर्भावग्रस्त क्षेत्राची व्याप्ती मोठ्या प्रमाणावर असल्यास वरीलप्रमाणे आपत्कालीन निवीष्टांचा वापर करण्यात यावा. त्याचबरोबर त्या ठिकाणी राज्य पुरस्कृत पिक संरक्षण कार्यक्रम / राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियानांतर्गत एकात्मिक किड व्यवस्थापन कार्यक्रम इत्यादी योजनांमधील एकात्मिक किड व्यवस्थापनासाठी तरतूद असलेल्या पिक संरक्षण निवीष्टांचा वापर करुन सदर प्रादुर्भावग्रस्त क्षेत्र आर्थिक नुकसान संकेतपातळीच्या खाली ठेवण्यासाठी आवश्यक ती सर्व कार्यवाही करण्यात यावी.

## १२. प्रकल्प सनियंत्रण कार्यपध्दती :

या प्रकल्पातील सर्वेक्षणाद्वारे प्राप्त होणा-या निरीक्षणांवर आधारीत तालुकानिहाय व जिल्हानिहाय विश्लेषण करुन आवश्यक त्या उपाययोजना अत्यंत तातडीने हाती घेणे आवश्यक असल्याने खालीलप्रमाणे कीड व्यवस्थापनासाठी सनियंत्रण कार्यपध्दती निर्धारित करण्यात आली आहे.

**१२.१ कृषि आयुक्तालय स्तर :-** कृषि आयुक्तालय स्तरावरुन कृषि उपसंचालक, (फलो-२) हे प्राप्त निरीक्षणांच्या आधारे विश्लेषण करतील व जिल्हानिहाय विश्लेषण विभागीय संबंधित कृषि सहसंचालक व जिल्हा अधीक्षक कृषि अधिकारी यांना ई-मेल द्वारे पाठवतील. ज्या ठिकाणी कीड-रोगांची तीव्रता आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्यावर दिसून येईल त्या ठिकाणी तालुकानिहाय विश्लेषण कृषि आयुक्तालयामार्फत पाठविण्यात येईल. राज्यातील पिकांवरील कीडींची तीव्रता आर्थिक नुकसान संकेत पातळीचे खाली राहण्यासाठी कृषि सहसंचालक (फलोत्पादन) हे संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालकांकडे वेळोवेळी पाठपुरावा करुन आढावा घेतील. तसेच संचालक फलोत्पादन सदर प्रकल्पाचा वेळोवेळी आढावा घेऊन व क्षेत्रीय भेटी देऊन कीड-रोग परिस्थिती नियंत्रणात आहे याबाबत खात्री करतील.

**१२.२ विभागस्तर :-** विभागीय स्तरावर विभागीय कृषि सहसंचालक हे प्रकल्पाचे नियोजन, अंमलबजावणी या बाबत आढावा घेवून सनियंत्रण करतील. ऑनलाईन विश्लेषणाप्रमाणे प्राप्त अॅडव्हायझरीनुसार करावयाच्या आवश्यक त्या उपाययोजना युध्दपातळीवर मोहिम स्वरुपात राबवतील. तसेच ज्या ठिकाणी कीड रोगाची परिस्थिती आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या वर असेल अशा परिस्थितीत वेळच्या वेळी पाठपुरावा करुन विभागातील कीड रोगांच्या नियंत्रणासाठी उपाययोजना, नियोजन व अंमलबजावणी करुन कीड रोगांची तीव्रता आर्थिक नुकसान संकेत पातळीचे खाली ठेवण्याची संपूर्ण जबाबदारी संबंधित विभागाचे विभागीय कृषि सहसंचालक यांची राहिल. आपत्कालीन परिस्थितीत कीड रोग नियंत्रणासाठीच्या निवीष्टांच्या खरेदी, पुरवठा व नियंत्रण संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालक करतील. तसेच आपत्कालीन परिस्थितीमध्ये आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या वरील कीड-रोग प्रदुर्भावग्रस्त क्षेत्राची व्याप्ती मोठ्या प्रमाणावर असल्यास आपत्कालीन परिस्थितीतील उपलब्ध करुन दिलेल्या पीक संरक्षण निविष्टांसह राज्य पुरस्कृत पिक संरक्षण कार्यक्रम / राष्ट्रीय फलोत्पादन अभियानांतर्गत एकात्मिक किड व्यवस्थापन कार्यक्रम इत्यादी योजनांमधील एकात्मिक कीड व्यवस्थापनासाठी तरतूद असलेल्या पीक संरक्षण निविष्टांचा वापर करुन सदर प्रादुर्भावग्रस्त क्षेत्र आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या खाली आणण्याकरीता नियोजन व सनियंत्रण संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालक करतील. विभागातील कीड रोग स्थितीबाबतची आकडेवारीसह माहिती रेडिओ, आकाशवाणी, वृत्तपत्रे तसेच इतर माध्यमांद्वारे प्रसिध्दीस देण्याची जबाबदारी विभागीय कृषि सहसंचालक यांची राहिल.

विभागीय स्तरावर विभागीय कृषि सहसंचालक यांचे अध्यक्षतेखाली विभागातील सर्व जिल्हा अधीक्षक कृषि अधिकारी यांची विभागीय प्रकल्प सनियंत्रण समिती स्थापन करण्यात यावी. विभागीय कृषि सहसंचालक यांचे कार्यालयातील अधीक्षक कृषि अधिकारी हे या समितीचे सदस्य सचिव असतील. या समितीची प्रत्येक महिन्याच्या पहिल्या आठवड्यात बैठक घेण्यात यावी. सदर बैठकीमध्ये प्रकल्पाच्या प्रगतीबाबत आढावा घेण्यात यावा व बैठकीच्या इतिवृत्ताबरोबर प्रकल्पाचा जिल्हानिहाय भौतिक, आर्थिक, लक्ष व साध्य याबाबतचा मासिक प्रगती अहवाल कृषि आयुक्तालयास सादर करण्यात यावा.

**१२.३ जिल्हास्तर:-** जिल्हा अधीक्षक कृषि अधिकारी यांचे अध्यक्षतेखालील जिल्हास्तरावर नव्याने स्थापन केलेल्या जिल्हास्तरीय किड/रोग सर्वेक्षण, निदान व सल्लागार पथक यांचे मार्फत दर महिन्याला

आढावा घ्यावा व जनजागृती प्रशिक्षणाचे नियोजन करावे. ज्या ठिकाणी कीड रोगांची तिब्रता वाढलेली आहे त्याठिकाणी कीड रोग नियंत्रणाची मोहिम राबविण्याची व कीड रोगांची तिब्रता आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या खाली आणण्याची संपूर्ण जबाबदारी संबंधित जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी व तालुका कृषि अधिकारी यांची राहिल. जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी हे त्यांच्या जिल्ह्यातील या प्रकल्पाचे संपूर्ण संनियंत्रण त्यांचे कार्यालयातील कृषि उपसंचालकांमार्फत करतील.

कृषि उपसंचालक दर पंधरवड्यास ऑनलाईन अहवाल नोंदणी, कृषि विद्यापीठाकडून प्राप्त होणा-या अॅडव्हायजरी, एसएमएस द्वारे द्यावयाचे शेतकरी संदेश, अहवालानुसार कीड-रोग परिस्थिती, कीड रोगाबाबत आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्यावर गेलेली गावे/तालुके व याबाबत केलेली कार्यवाही, कीड रोगाबाबत आपत्कालीन परिस्थिती निर्माण झालेली गावे/ तालुके याबाबत केलेल्या निविष्टांच्या पुरवठ्याबाबतचे नियोजन, प्रसिध्दीबाबत केलेली कार्यवाही, संगणक प्रणाली, मनुष्यबळाच्या क्षेत्रिय कामाबाबत व त्यांच्या मानधन वितरणाबाबतच्या अडचणींच्या निराकरणाबाबत केलेली कार्यवाहीचा वस्तुस्थिती अहवाल (Fact sheet) तसेच प्रकल्पाच्या भौतिक-आर्थिक, लक्ष-साध्य प्रगतीबाबत मासिक अहवाल तयार करुन विभागीय प्रकल्प सनियंत्रण समितीच्या बैठकीस तसेच कृषि आयुक्तालयास सादर करतील.

कृषि उपसंचालक (जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांचे कार्यालय) यांनी सादर करावयाचा पाक्षिक वस्तुस्थिती अहवाल (Fact sheet).

विभाग:-

जिल्हा :-

अहवालाचा कालावधी :-

| अ.क्र | तपशिल  | केलेल्या कार्यवाहीची माहिती |
|-------|--|-----------------------------|
| १     | कीड सर्वेक्षकांच्या ऑनलाईन नोंदणी केलेल्या सर्वेक्षण अहवालांची पाक्षिक संख्या  |                             |
| २     | कृषि पर्यवेक्षकांच्या ऑनलाईन नोंदणी केलेल्या सर्वेक्षण अहवालांची पाक्षिक संख्या  |                             |
| ३     | कृषि विद्यापीठाकडून प्राप्त झालेल्या तालुकानिहाय अॅडव्हायजरीची पाक्षिक संख्या.   |                             |
| ४     | प्रत्येक तालुक्यासाठी संबंधीत पंधरवड्यासाठी आठवड्यातून दोन वेळा अॅडव्हायजरी प्राप्त झाली आहे काय? नसल्यास तालुक्याचे नांव, कालावधी व कारण. |                             |
| ५     | एसएमएसद्वारे अॅडव्हायजरी देण्यासाठी नोंदवलेल्या शेतक-यांची संख्या.   |                             |
| ६     | शेतक-यांना पाठवलेल्या पाक्षिक अॅडव्हायजरी एमएमएसची संख्या.   |                             |
| ७     | विविध प्रसिध्दी माध्यमांद्वारे प्रसारीत केलेल्या पाक्षिक अॅडव्हायजरीची संख्या.   |                             |
|       | अ) आकाशवाणी  |                             |
|       | ब) दूरदर्शन / खाजगी वाहिन्या   |                             |

| अ.क्र | तपशिल   |               | केलेल्या कार्यवाहीची माहिती |
|-------|---|---------------|-----------------------------|
|       | क)  | वृत्तपत्रे    |                             |
|       | ड)  | पत्रकार परिषद |                             |
|       | इ)  | मेळावे/ इतर   |                             |
| ८     | प्रगतशील शेतक-यांच्या मदतीने किती गावांत साप्ताहिक बैठका घेतल्या जातात ?  |               |                             |
| ९     | संबंधीत पंधरवड्यात घेण्यात आलेल्या साप्ताहिक गांव बैठकांची संख्या.  |               |                             |
| १०    | संबंधीत पंधरवड्यात कीड रोगामुळे आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्यावर गेलेल्या गावांची व तालुक्यांची संख्या.  |               |                             |
| ११    | संबंधीत पंधरवड्यात कीड रोग परिस्थिती आर्थिक नुकसान पातळीच्याखाली ठेवण्यासाठी केलेली कार्यवाही.  |               |                             |
| १२    | संबंधीत पंधरवड्यात कीड रोगामुळे आपत्कालीन परिस्थिती उद्भवली आहे काय? असल्यास या परिस्थितीत पीक संरक्षण निविष्टांचा पुरवठा करण्यात आला आहे काय? तसेच, पीक संरक्षण निविष्टांबाबत केलेले नियोजन. |               |                             |
| १३    | मनुष्यबळ सेवा पुरवठादार ठेकेदाराकडून त्याच्यामार्फत नियुक्त कामगारांना वेतन वेळेवर दिले जाते काय? नसल्यास कारण व निराकरणाबाबत केलेली कार्यवाही  |               |                             |
| १४    | मनुष्यबळाच्या क्षेत्रिय कामाबाबत व संगणक प्रणालीबाबत अडचणी आहेत काय? असल्यास निराकरणाबाबत केलेली कार्यवाही.   |               |                             |

**१२.४ उपविभागस्तर :- या प्रकल्पाची संपूर्ण क्षेत्रीय स्तरावरील कार्यन्वयनाची जबाबदारी उपविभागीय कृषि अधिकारी यांची राहिल.** त्यांचे कार्यक्षेत्रातील सोबतचे प्रपत्रानुसार उपलब्ध असलेल्या कीड सर्वेक्षक, कृषि पर्यवेक्षक, संगणक प्रचालक यांचे मदतीने संपूर्ण प्रकल्पाचे वेळच्या वेळी योग्य नियोजन करून सर्वेक्षण, उपाययोजना सल्ला, नियोजन, अंमलबजावणी व संनियंत्रण करतील. प्रकल्पांतर्गत नियुक्त कीड सर्वेक्षक व कृषि पर्यवेक्षकांकडून योग्य प्रकारे सर्वेक्षण होण्यासाठी त्यांचेवर देखरेख ठेवणे तसेच ते मुख्यालयी हजर असलेबाबत खात्री करण्याची जबाबदारी उपविभागीय कृषि अधिकारी यांची राहिल. उपविभागीय कृषि अधिकारी प्रत्येक आठवड्यासाठी तालुकानिहाय ऑनलाईन अॅडव्हायझरीचा एसएमएस तालुका कृषि अधिकारी यांना करतील. प्रत्येक आठवड्यामध्ये शेतकरी व तालुका कृषि अधिका-यांना दोन वेळा एसएमएसद्वारे अॅडव्हायझरी देणे, तसेच या अॅडव्हायझरी रेडीओ, आकाशवाणी, वृत्तपत्रात निवेदनाद्वारे प्रसिध्दीस देण्याची जबाबदारी उपविभागीय कृषि अधिकारी यांची राहिल. या योजनेची परिणामकारक अंमलबजावणी आणि एकूणच यश उपविभागीय कृषि अधिकारी यांच्या नियोजन आणि प्रत्यक्ष कामावर अवलंबून आहे. त्या दृष्टीने उपविभागीय कृषि अधिकारी यांची भूमिका अत्यंत महत्वाची राहिल.

**१२.५ तालुकास्तर :-** या प्रकल्पांतर्गत कृषि विभागाच्या क्षेत्रीय कर्मचा-यांनी प्रगतशील शेतक-यांच्या मदतीने आंबा, डाळींब, केळी, संत्रा, मोसंबी व चिकू पिक घेणा-या प्रत्येक गावामध्ये दहा याप्रमाणे साप्ताहिक बैठकांचे नियोजन व अंमलबजावणी करणे तसेच उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडून आठवडानिहाय ऑनलाईन सर्वेक्षणावर आधारीत प्राप्त झालेल्या अॅडव्हायजरीच्या मराठी भाषेतील जम्बो झेरॉक्स करुन प्रत्येक गावातील कृषि वार्ता फलकावर तसेच कृषि सेवा केंद्राच्या नोटीस बोर्डवर वेळोवेळी लावल्या जातील याकडे व्यक्तिशः लक्ष देण्याची संपुर्ण जबाबदारी तालुका कृषि अधिकारी यांची राहिल. **उपविभागीय कृषि अधिकारी यांचेकडून अॅडव्हायजरीचा एसएमएस प्राप्त करुन घेणे व सदर एसएमएसच्या मराठी भाषेतील जम्बो झेरॉक्स प्रती तयार करुन तालुक्यातील प्रत्येक गावातील कृषि वार्ताफलकावर तसेच कृषिसेवा केंद्रांवर लावण्याची संपुर्ण जबाबदारी तालुका कृषि अधिकारी व त्यांचे अधिनस्त मंडळ कृषि अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक व कृषि सहाय्यक यांची राहिल. तसेच ज्या ठिकाणी कीड रोगांची तीव्रता वाढलेली आहे त्याठिकाणी कीड रोग नियंत्रणाची मोहिम राबविण्याकरिता आपत्कालीन परिस्थितीत पुरवठा करण्यात आलेल्या निविष्टा शेतक-यांना वेळीच उपलब्ध करुन कीड रोगांची तीव्रता आर्थिक नुकसान संकेत पातळीच्या खाली आणण्याची संपुर्ण जबाबदारी तालुका कृषि अधिकारी यांची राहिल.**

**१३ लेखाविषयक :-**

या प्रकल्पासाठीचे अनुदान राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (R.K.V.Y) मधून उपलब्ध करुन देण्यात येत आहे. या प्रकल्पासाठी संचालक (फलोत्पादन) यांना आहरण व संवितरण अधिकारी म्हणुन घोषित करण्यात येत आहे. सदरचे अनुदान आरटीजीएस द्वारे बँक खात्यावर संबंधित विभाग, संस्था यांना कृषि आयुक्तालयाकडून वितरीत करण्यात येईल. प्राप्त अनुदानाचा वापर करताना विहित लेखाविषयक कार्यपध्दतीचा अवलंब करण्यात यावा. प्रकल्पांतर्गत दरमहा झालेल्या खर्चाचा मासिक प्रगती सोबत दिलेल्या विहित प्रपत्रात दरमहा दहा तारखेपर्यंत कृषि आयुक्तालयास सादर करण्यात यावा. तसेच **सदर प्रकल्प सर्वकष जिल्हा कृति आराखडयात समाविष्ट करण्याबाबत आवश्यक ती कार्यवाही करण्यात यावी.**

प्रकल्पांतर्गत कृषि विभागासाठीचे अनुदान आरटीजीएस द्वारे बँक खात्यावर संबंधीत जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांना कृषि आयुक्तालयाकडून वितरीत करण्यात येईल. त्यांनी सदर अनुदान क्षेत्रीय पातळीवरील तालुका कृषि अधिकारी, उपविभागीय कृषि अधिकारी, जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी व विभागीय कृषि सहसंचालक यांचे स्तरावर त्यांचे संबंधीत बाबींनुसार पुढीलप्रमाणे उपलब्ध करुन द्यावे.

विभागीय स्तरावरील अनुदान संबंधित विभागाचे मुख्यालय असलेल्या जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी यांचे स्तरावर उपलब्ध करुन देण्यात येईल व त्यांनी सदर अनुदान संबंधित विभागीय कृषि सहसंचालक यांना उपलब्ध करुन द्यावे.

| अ.क्र. | बाब  | रक्कम वितरीत करावयाचा स्तर  |
|--------|--|-----------------------------|
| १.     | कीड सर्वेक्षकांचे वेतन, प्रवास भत्ता, सेवा पुरवठादार ठेकेदाराचे सेवा आकारासह रु.९५००/- प्रति कीड सर्वेक्षक प्रति महिना याप्रमाणे | जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी |
| २.     | संगणक प्रचालकांचे मानधन सेवा पुरवठादार ठेकेदाराचे सेवा आकारासह रु.७०००/- प्रति संगणक प्रचालक प्रति महिना याप्रमाणे               | जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी |

| अ.क्र. | बाब   | रक्कम वितरीत करावयाचा स्तर  |
|--------|---|-----------------------------|
| ३.     | कृषि पर्यवेक्षकांच्या फिरस्तीकरीता मासिक भाडेतत्वावर वाहन उपलब्ध करून घेणे. रु. २००००/-प्रति महिना प्रति कृषि पर्यवेक्षक याप्रमाणे  | उपविभागीय कृषि अधिकारी      |
| ४.     | कीड सर्वेक्षण चमूसाठी आकस्मिक खर्च आंबा, डाळींब व केळी या पिकांकरीता रु. २५०००/- प्रति चमू याप्रमाणे  | उपविभागीय कृषि अधिकारी      |
| ५.     | विभागीय कृषि सहसंचालक, यांचे कार्यालयात संगणक प्रणाली मदतनीस रु. १४०००/- प्रति महिना याप्रमाणे  | विभागीय कृषि सहसंचालक       |
| ६.     | विभागीय कृषि सहसंचालक यांच्याकरीता आकस्मिक निधी रु. ५५०००/- प्रति विभागीय कृषि सहसंचालक   | विभागीय कृषि सहसंचालक       |
| ७.     | आंबा, डाळींब व केळी पिकांकरीता ऑनलाईन अॅडव्हायजरी जंबो झेरॉक्स करून प्रत्येक गावात प्रसिध्द करण्यासाठी प्रति तालुका रक्कम रु. ५,००० याप्रमाणे एकूण ९५ तालुक्यांसाठी   | तालुका कृषि अधिकारी         |
| ८.     | मास्टर ट्रेनर्सचे कृषि विद्यापीठात प्रशिक्षण आयोजित करणे (उपविभागीय कृषि अधिकारी, १० कर्मचारी प्रति जिल्हा व कृषि विद्यापीठांचे जिल्हा प्रतिनिधी तसेच अहमदनगर जिल्ह्यातून २ कर्मचारी) यांच्याकरीता रु. १२००/- प्रति प्रशिक्षणार्थी याप्रमाणे. | विभागीय कृषि सहसंचालक       |
| ९.     | कृषि विभागाच्या सर्व क्षेत्रिय कर्मचा-यांसाठी मास्टर ट्रेनर्स यांच्या सहाय्याने द्यावयाचे जिल्हास्तरीय प्रशिक्षण रु. एक लाख प्रति जिल्हा/ रु. २५०/- प्रति कर्मचारी याप्रमाणे  | जिल्हा अधिक्षक कृषि अधिकारी |
| १०.    | कीड रोग सर्वेक्षण चमूसाठी कृषि विद्यापीठात प्रशिक्षण आयोजित करणे. रु. ७००/- प्रति प्रशिक्षणार्थी याप्रमाणे  | विभागीय कृषि सहसंचालक       |
| ११.    | आपत्कालिन परीस्थितीत जैविक/रासायनिक निविष्टांचा ५० टक्के किंवा रु. १०००/- प्रति हेक्टर याप्रमाणे पुरवठा करणे  | विभागीय कृषि सहसंचालक       |

**प्रकल्पातील विविध बाबीअंतर्गत निधीची आवश्यकता :-**

प्रकल्पातील सहभागी संस्था, विभाग यांना बाबनिहाय लागणा-या अनुदानाची आवश्यकता व त्याचा तपशिल पुढील प्रमाणे आहे. **(रक्कम लाखात)**

| अ. क्र.  | बाब   | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील  | लागणारे अनुदान | संस्था             |
|--|---|---|----------------|--------------------|
| <b>अ) कीड- रोग सर्वेक्षण व व्यवस्थापन सल्ला पद्धती</b> |   |   |                |                    |
|  | <b>संगणक प्रचालक</b>  | कृषि पर्यवेक्षकाचे अधिनस्त संगणक प्रचालनाचे काम करणे.   |                | संबंधीत जि.अ.कृ.अ. |
| १  | डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा या पिकांकरीता :- संगणक प्रचालक यांचे (रु.७,००० प्रती महिना मनुष्यबळाच्या सेवाकरिता मानधन) ११ महिन्यांकरीता ४१ संगणक प्रचालक                |   | ३१.५७          |                    |
| २  | आंबा या पिकांकरीता :- संगणक प्रचालक यांचे (रु.७,००० प्रती महिना मनुष्यबळाच्या सेवाकरिता मानधन) ७ महिन्यांकरीता १० संगणक प्रचालक   |   | ४.९०           |                    |
| <b>एकूण</b>  |   |   | <b>३६.४७</b>   |                    |
|  | <b>किड सर्वेक्षक</b>  | वरील प्रमाणे कृषि पर्यवेक्षकांचे अधिनस्त क्षेत्रिय पातळीवर सर्वेक्षणाचे व माहिती गोळा करण्याचे काम करणे.            |                | संबंधीत जि.अ.कृ.अ. |
| ३  | डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा या पिकांकरीता :- किड सर्वेक्षक यांचे (रु.९५०० प्रती महिना मनुष्यबळाच्या सेवाकरिता मानधन व प्रवास भत्ता) ११ महिन्यांकरीता १५२ किड सर्वेक्षक |   | १५८.८४         |                    |
| ४  | आंबा पिकांकरीता :- किड सर्वेक्षक यांचे (रु.९५०० प्रती महिना मनुष्यबळाच्या सेवाकरिता मानधन व प्रवास भत्ता) ७ महिन्यांकरीता ५४ किड सर्वेक्षक                                      |   | ३५.९१          |                    |
| <b>एकूण</b>  |   |   | <b>१९४.७५</b>  |                    |
|  | <b>कृषि पर्यवेक्षक</b>  | किड सर्वेक्षकाच्या कामाचे नियंत्रण व रोवींग सर्व्हे करणे, कीडरोग पूर्व इतिहास पुस्तिका तयार करण्यासाठी फिरस्तीकरीता |                | संबंधीत जि.अ.कृ.अ. |
| ५  | कृषि पर्यवेक्षक फिरतीसाठी मासिक भाडे तत्वावर वाहन घेणे. रु.२०,००० प्रती महिना प्रमाणे डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा या पिकांकरीता :- ३७ कृषि पर्यवेक्षक ११ महिन्यांकरीता |   | ८१.४०          |                    |
| ६  | कृषि पर्यवेक्षक फिरतीसाठी मासिक भाडे तत्वावर वाहन घेणे. रु.२०,००० प्रती महिना प्रमाणे आंबा पिकांकरीता :- १० कृषि पर्यवेक्षक ७ महिन्यांकरीता                                     |   | १४.००          |                    |
| <b>एकूण</b>  |   |   | <b>९५.४०</b>   |                    |

| अ. क्र. | बाब  | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील  | लागणारे अनुदान | संस्था   |
|---------|--|---|----------------|--|
| ७       | ऑनलाईन माहिती भरण्यासाठी तयार करण्यात आलेल्या संगणक प्रणाली मध्ये नवीन बाबींचा अंतर्भाव करणे तसेच आवश्यकतेनुसार सुधारणा करणे व त्याचे व्यवस्थापन करणे (संगणक, लॅपटॉप, प्रिंटर व त्यांचेशी संलग्न माहिती तंत्रज्ञान उपकरणेसह) | ऑनलाईन सर्वेक्षण अहवालाची नोंद करणे तसेच डाटा भरल्याची खात्री करणे. कीड रोग परिस्थितीची माहिती तयार करणे, तालुका निहाय अॅडव्हायजरी देणे.                                      | ५.००           | राष्ट्रीय एकात्मिक किड व्यवस्थापन केंद्र, नवी दिल्ली |
| ८       | जीआयएस प्रणाली विकसित करणे. (रु. ६००० प्रती जीपीएस)  | किडरोगाच्या ऑनलाईन अहवालाच्या माहितीवरून आकस्मिक उद्भवू शकणाऱ्या किडरोगाचे भाग निश्चित करणे.  | २.००           | संबंधीत जि.अ.कृ.अ.                                   |
| ९       | <b>सर्वेक्षण किट :-</b><br>आंबा या पिकाकरीता :- सर्वेक्षण किट १ किड सर्वेक्षका करिता ( २ प्लॉटसाठी ८ फ्रुट प्लॉय ट्रेप्स व ३२ ल्युअर्स)<br>(फक्त आंबा पिकाकरीता - ५४ सर्वेक्षक)  | सापळे लावणे   | ०.९८           | डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली      |
| १०      | आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा पिकांसाठी डाटा भरण्यासाठी सर्वेक्षण प्रपत्रे छपाई करणे व वितरीत करणे.   | २०० किड सर्वेक्षक व ४७ कृषि पर्यवेक्षक यांचेकरिता ६२ प्रपत्रे प्रति आठवडा ४४ आठवड्याकरीता एकूण ६३८३५२ प्रपत्रांसाठी प्रपत्र छपाई व वितरण करणे. रु. २.०० प्रति प्रपत्र प्रमाणे | १२.४८          | राष्ट्रीय एकात्मिक किड व्यवस्थापन केंद्र, नवी दिल्ली |
| ११      | आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा पिकांसाठी सर्वेक्षण किट करिता आकस्मिक खर्च रु. १०,०००/- प्रती कीड सर्वेक्षण चमु याप्रमाणे ४७ चमुंसाठी   | सीडी, स्टेशनरी खरेदीसाठी, इंटरनेट कनेक्शनचे मासिक भाडे, सायबर कॅफे, इत्यादीसाठी.  | ४.७०           | संबंधीत जि.अ.कृ.अ.                                   |



| अ. क्र. | बाब  | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील  | लागणारे अनुदान | संस्था   |
|---------|--|---|----------------|--|
| १२      | किड रोग सर्वेक्षण व सल्ला चमुसाठी कृषि विद्यापीठात प्रशिक्षण :- ( हंगाम सुरु होण्यापुर्वी दोन दिवसाचे प्रशिक्षण आयोजित करणे) रु. ७००/- प्रती प्रशिक्षणार्थी या प्रमाणे २०० किड सर्वेक्षक, ४७ संगणक प्रचालक व ४७ कृषि पर्यवेक्षक करीता (एकूण २९४)   | किड रोग सर्वेक्षण ऑनलाईन माहिती भरणे व कीड रोग ओळख व सर्वेक्षण याबाबतचे प्रशिक्षण आयोजित करणे                                     | २.०६           | १)म.फु.कृ.वि.राहुरी,<br>२)डॉ. बा.सा.कों.कृ. वि, दापोली,<br>३) डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला,<br>४)म.कृ.वि. परभणी<br>५) केळी संशोधन केंद्र, जळगाव  |
| १३      | आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा पिकांसाठी संशोधन सहयोगी : राज्य कृषि विभागासाठी -२, (किटकशास्त्र व वनस्पती रोगशास्त्र), म.फु.कृ.वि. राहुरी, डॉ.बा.सा.कों.कृ.वि. दापोली, डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला, म.कृ.वि. परभणी यांना प्रति संस्था २ याप्रमाणे एकूण ८ तसेच आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा संशोधन संस्था प्रत्येकी १ याप्रमाणे ६ यांचेकरीता असे एकूण ११ महिन्यांकरीता १६ संशोधन सहयोगी यांचेकरीता प्रति कर्मचारी रु. २३०००/- प्रती महिना अधिक घरभाडे. | संशोधन सहाय्यक, (किटकशास्त्र / वनस्पती रोगशास्त्र) - आयपीएम मोड्युल, प्रसिध्दी साहित्य तयार करणे व साप्ताहिक सल्ले प्रसारीत करणे. | ४८.५८          | १) राज्य कृषि विभाग,<br>२)म.फु.कृ.वि.राहुरी,<br>३)डॉ. बा.सा.कों.कृ. वि, दापोली,<br>४) डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला,<br>५)म.कृ.वि. परभणी<br>६) केळी संशोधन केंद्र, जळगाव<br>७)विभागीय संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला<br>८) चिक्कू संशोधन केंद्र, पालघर<br>९) राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर,<br>१०) राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली,<br>११) राष्ट्रीय संत्रा संशोधन केंद्र, नागपूर |
| १४      | <b>संशोधन सहयोगी (एसएमएस)</b><br>राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर-१,<br>राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली-१,<br>राष्ट्रीय संत्रा संशोधन केंद्र, नागपूर-१<br>यांचेकरीता प्रति कर्मचारी रु. २३०००/- प्रती महिना अधिक घरभाडे, याप्रमाणे एकूण ३ संशोधन सहयोगी ११ महिन्यांसाठी.  | संशोधन सहाय्यक, किटकशास्त्र/ वनस्पती रोगशास्त्र) - आयपीएम मोड्युल प्रसिध्दी साहित्य तयार करणे व साप्ताहिक सल्ले प्रसारीत करणे.    | ९.८७           | १) राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर,<br>२) राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली,<br>३) राष्ट्रीय संत्रा संशोधन केंद्र, नागपूर  |

| अ. क्र. | बाब   | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील   | लागणारे अनुदान | संस्था   |
|---------|---|--|----------------|--|
| १५      | <b>संशोधन सहयोगी (एसएमएस)</b><br>राष्ट्रीय एकात्मिक किड व्यवस्थापन केंद्र नवी दिल्ली यांचेकरीता प्रति कर्मचारी रु. २३०००/- प्रती महिना अधिक घरभाडे, याप्रमाणे एकूण २ संशोधन सहयोगी ११ महिन्यांसाठी.   | संशोधन सहाय्यक, किटकशास्त्र/ वनस्पती रोगशास्त्र) - आयपीएम मोड्युल प्रसिध्दी साहित्य तयार करणे व साप्ताहिक सल्ले प्रसारीत करणे. | ६.५८           | एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली   |
| १६      | <b>संगणक प्रचालक - म.फु.कृ.वि.राहुरी, डॉ. बा.सा.कों.कृ.वि., दापोली, डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला, म.कृ.वि. परभणी यांचेकरीता प्रत्येकी -१ असे ४ आणि आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा या ६ पिकांसाठी प्रत्येकी -१ असे ६ संशोधन केंद्र असे एकूण १० संगणक प्रचालक रु. ८०००/- प्रती महिना ११ महिन्यांकरीता</b> | किडरोग व हवामानावर आधारित माहिती संकलीत करणे व विश्लेषण करणे.  | ८.८०           | १)म.फु.कृ.वि.राहुरी<br>२)डॉ. बा.सा.कों.कृ. वि, दापोली,<br>३) डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला,<br>४)म.कृ.वि. परभणी<br>५) केळी संशोधन केंद्र, जळगाव<br>६)विभागीय संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला<br>७) चिक्कू संशोधन केंद्र, पालघर<br>८) राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर,<br>९) राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली,<br>१०) राष्ट्रीय संत्रा संशोधन केंद्र, नागपूर |
| १७      | <b>संगणक प्रचालक - राज्य कृषि विभाग यांचेकरीता ३ संगणक प्रचालक रु. ८०००/- प्रती महिना ११ महिन्यांकरीता</b>  | किडरोग व हवामानावर आधारित माहिती संकलीत करणे व विश्लेषण करणे.  | २.६४           | <b>राज्य कृषि विभाग</b>  |
| १८ अ    | <b>सॉफ्टवेअर सपोर्टर (संगणक प्रणाली मदतनीस):-</b> विभागीय कृषि सहसंचालक ठाणे, पुणे, नाशिक, कोल्हापूर, औरंगाबाद, लातूर, अमरावती, नागपूर प्रत्येकी १ याप्रमाणे ८ संगणक प्रणाली व्यवस्थापक) रु. १४००० प्रति महिना प्रमाणे ११ महिन्यांसाठी  | कीड नियंत्रकांचे कडील लॅपटॉप संबंधी अडचणी सोडवण्याकरिता विभागीय स्तरावर नेमणूक करणे  | १२.३२          | वि.कृ.स.सं.  |
| १९      | राज्यस्तरीय कक्षासाठी अकाउंटंट (१५,००० रु. प्रमाणे ११ महिन्यांसाठी)   | लेखाविषयक कामकाज करणे  | १.६५           | कृषि विभाग   |

| अ. क्र. | बाब  | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील  | लागणारे अनुदान | संस्था   |
|---------|--|---|----------------|--|
| २०      | <b>वाहतूक व प्रवास भत्ता-</b><br>अ) प्रति रू. ०.५० लाख याप्रमाणे ४ कृषि विद्यापीठे व ६ संशोधन केंद्र (आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा)  | निश्चित प्लॉट सर्व्हे व रोव्हिंग प्लॉटचे रँडमली भेट देवून निरिक्षणे तपासणे.   | ५.००           | संबंधीत सर्व   |
|         | ब) रू. १.०० लाख राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, त्रिची   | बैठका साठी उपस्थित रहाणे.   | १.००           |  |
|         | क) रू. २.०० लाख प्रति संस्था याप्रमाणे कृषि विभाग  |   | २.००           |  |
|         | ड) रू. २.०० लाख राष्ट्रीय एकात्मिक किड व्यवस्थापन केंद्र नवी दिल्ली यांचेकरीता   |   | २.००           |  |
| २१      | <b>आकस्मिक निधी :-</b> अ) प्रति रू. ०.५० लाख राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, त्रिची, राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर, राष्ट्रीय लिंबुवर्णीय संशोधन केंद्र, नागपूर यांचेकरीता प्रत्येकी १ याप्रमाणे ३, प्रत्येक कृषि विद्यापीठास १ याप्रमाणे ४ व ६ संशोधन केंद्रासाठी (आंबा, डाळींब, केळी, चिक्कू, मोसंबी, संत्रा ) प्रत्येकी १ याप्रमाणे ६ असे एकुण १३ (कार्यालयीन सहाय्यकासहीत) | कार्यक्रमांतर्गत प्रायोगिक साहित्य खरेदी, स्टेशनरी आणि संकिर्ण खर्च, पोस्टेज चार्जेस, फॅक्स इत्यादी साहित्य विकसीत करणे. व्हीडीओ फिल्म तयार करणे. | ६.५०           | १)म.फु.कृ.वि.राहुरी<br>२)डॉ.बा.सा.कों. कृ. वि, दापोली,<br>३) डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला,<br>४)म.कृ.वि. परभणी<br>५) केळी संशोधन केंद्र, जळगाव<br>६)विभागीय संशोधन केंद्र, वेंगुर्ला<br>७) चिक्कू संशोधन केंद्र, पालघर<br>८) राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र, सोलापूर,<br>९) राष्ट्रीय केळी संशोधन केंद्र, तिरुचिरापल्ली,<br>१०) राष्ट्रीय संत्रा संशोधन केंद्र, नागपूर |
|         | ब) रू. १.०० लाख - कृषि विभाग यांचेकरीता  |   | १.००           | राज्य कृषि विभाग   |
|         | क) रू. १.०० लाख राष्ट्रीय एकात्मिक किड व्यवस्थापन केंद्र नवी दिल्ली यांचेकरीता   |   | १.००           | एनसीआयपीएम, नवी दिल्ली   |
| २२      | कृषि विद्यापीठ/कृषि विज्ञान केंद्र यांच्या प्रतिनिधीसाठी आकस्मिकता व प्रवासभत्ता २३ जिल्हयांकरीता रू. १०,०००/- प्रती जिल्हा या प्रमाणे   | सर्व्हेक्षण चमुसाठी व प्रशिक्षणासाठी  | २.३०           | संबंधीत जि.अ.कृ.अ.   |

| अ. क्र.   | बाब  | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील   | लागणारे अनुदान | संस्था   |
|---|--|--|----------------|--|
| २३  | अ) ८ विभागीय कृषि सहसंचालक यांचेसाठी आकस्मिक निधी रु. ५५ हजार प्रती वि.कृ.स.सं   | आकस्मिक खर्चासाठी साहीत्य, स्टेशनरी, फॅक्स, दुरध्वनी, व्हीडीओक्लिप्स प्रचार साहीत्य इ. साठी  | ४.४०           | संबंधीत वि.कृ.स.सं.  |
| २३  | ब) तालुका कृषि अधिका-यांसाठी प्रत्येक गावासाठी कीड रोग व्यवस्थापन अॅडव्हायजरी प्रसिध्दीबाबत प्रति तालुका याप्रमाणे १५८ तालुक्यांसाठी एकूण ४४ आठवडयासाठी  | ऑनलाईन अॅडव्हायजरी तयार करणे व त्याच्या जम्बो झेरॉक्स प्रति करुन गावातील वार्ता फलकावर लावणे.  | ७.९०           | संबंधीत जि.अ.कृ.अ.   |
| २४  | ऑनलाईन एसएमएस सेवेकरिता आवर्ती खर्च  | एसएमएस सेवेचे व्यवस्थापन करण्याकरिता   | २.३६           | कृषि विभाग   |
|   | <b>एकूण</b>  |  | <b>४८०.७३</b>  |  |
| <b>ब) कीड रोग प्रशिक्षण व शेतकरी जागृती कार्यक्रम</b> |  |  |                |  |
| २५  | <b>मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण -</b><br>आंबा, डाळींब व केळी - (५८ उप विभागीय कृषि अधिकारी, २३ जिल्हा प्रति १० कर्मचारी ) एकूण २८८ कर्मचारी, कृषि विद्यापीठांचे २३ जिल्हांचे प्रतिनिधी असे एकूण ३११ अधिकारी रु. १२००/- प्रती कर्मचारी प्रमाणे दोन दिवसाचे प्रशिक्षण | आंबा, डाळींब व केळी पीकासाठी मास्टर ट्रेनर्स व आयपीएम मोड्युल तयार करण्यासाठी.   | ३.७३           | १)म.फु.कृ.वि.राहुरी,<br>२)डॉ. बा.सा.कॉ.कृ. वि, दापोली,<br>३) डॉ. पं.दे.कृ.वि. अकोला,<br>४)म.कृ.वि. परभणी |
| २६  | कृषि विभागाच्या कर्मचा-यांसाठी प्रशिक्षण रु. २५०/- प्रती कर्मचारी, २०० कर्मचारी प्रती जिल्हा याप्रमाणे २३ जिल्हयांकरिता (रु.०.५० लाख प्रति जिल्हा)   | क्षेत्रीय कर्मचा-यांसाठी मास्टर ट्रेनरने आयोजित केलेले प्रशिक्षण.  | ११.५०          | जि.अ.कृ.अ.   |
| २७  | प्रचार व प्रसिध्दी साहीत्य - पोस्टर्स, घडीपत्रीका इतर इलेक्ट्रॉनिक मिडीया,वृत्तपत्रे रु. ०.५० लाख प्रती जिल्हा २३ जिल्हयांसाठी.  | जनजागृती करण्यासाठी  | ११.५०          |  |
| २८  | वरील सर्व कार्यक्रमाचे समन्वयन   | नियमित बैठकांचे आयोजन करणे, राज्यस्तरीय सर्वेक्षण चमुसाठी इंटरनेट सुविधा, स्टेशनरी, कार्यालयीन सुविधा, संगणक, प्रिंटर इतर अनुषंगिक साहित्य खरेदी करणे. | ३.००           | राज्य कृषि विभाग   |
|   | <b>एकूण</b>  |  | <b>२९.७३</b>   |  |

| अ. क्र.                                   | बाब  | बाबनिहाय खर्चाचा तपशील   | लागणारे अनुदान | संस्था          |
|---|--|--|----------------|-----------------|
| <b>क) पीक संरक्षण औषधांचा पुरवठा करणे</b> |  |  |                |                 |
| २९  | आपत्कालिन परिस्थितीत जैविक /रासायनिक निविष्टांचा ५० टक्के किंवा रु.१००० प्रति हेक्टर प्रमाणे १.५० लाख हेक्टरकरिता पुरवठा करणे. तसेच लाईट ट्रॅप्सचा ५० टक्के अनुदानावर पुरवठा करणे. | गरजेनुसार आकस्मिक उद्भवणा-या कीड रोगाच्या नियंत्रणासाठी औषध पुरवठा | ११५.६५         | वि.कृ.स.सं. (८) |
|   | <b>एकूण एकंदर (अ+ब+क)</b>  |  | <b>६२६.११</b>  |                 |
| <b>प्रकल्पासाठी लागणारी एकूण रक्कम</b>    |  |  |                |                 |
| अ. क्र.                                   | बाब  | रक्कम रु. लाखात  |                |                 |
| १   | कीड- रोग सर्वेक्षण व व्यवस्थापन सल्ला पद्धती   | ४८०.७३   |                |                 |
| २   | की ड रोग प्रशिक्षण व शेतकरी जागृती कार्यक्रम   | २९.७३  |                |                 |
| ३   | पीक संरक्षण औषधांचा पुरवठा करणे  | ११५.६५   |                |                 |
| <b>एकूण</b>                               |  | <b>६२६.११</b>  |                |                 |